

शुभाशीष



ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव तथा आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिये गये अमूल्य ज्ञान मोतियों द्वारा जन-जन का अलौकिक शृंगार करने वाली ज्ञानामृत पत्रिका ज्ञान-सेवा के 45 वर्ष पूरे कर चुकी है।

हर वर्ष हज़ारों नए पाठकों तक अपनी पहुँच बनाने वाली यह पत्रिका जीवन-मूल्यों का बोध कराती हुई, निराश दिलों में आशा की किरण जगाती हुई, जीवन जीने की कला सिखाती हुई लोकप्रियता के साथ-साथ लोक-कल्याण की ऊँचाइयों को तीव्रगति से छू रही है।

ज्ञान को संजीवनी बूटी भी कहा गया है जो विकारों और व्यसनों से मृतप्राय अथवा मूर्छित मानव को नवजीवन प्रदान करती है। ज्ञानामृत अपने नाम के अनुरूप कार्य करते हुए, सुषुप्त मानव चेतना को झकझोरने और महानता के मार्ग पर अग्रसर करने में निरंतर सफल होती जा रही है।

इस सफलता के पीछे है सभी राजयोगी बहन-भाइयों की अथक लगन, ज्ञानामृत से जिगरी प्रेम और बाबा को प्रत्यक्ष करने का उमंग-उत्साह। लगन, प्रेम और उत्साह के संगम से आप सदा आगे बढ़ते रहें और हर कंठ को ज्ञानामृत से तर करते रहें, यही मेरी शुभकामना है।

जो बहन-भाई अमूल्य समय निकाल कर, चिन्तन करके लेख भेजते हैं, जो इसे सुन्दर रूप प्रदान करते हैं, जो इसे सर्व तक पहुँचाने की सेवा करते हैं और जो इसका अध्ययन कर अपना तथा दूसरों का कल्याण करते हैं, वे सब बधाई के पात्र हैं।

वर्ष 2010-2011 के स्नेही पाठकों के प्रति मेरा यही शुभ सन्देश है कि आप ईश्वरीय खज़ानों का संपूर्ण जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें, स्वयं संतुष्ट रह सर्व को संतुष्ट करें, अपना सर्व बोझ ईश्वर को अर्पण कर सदा हल्के रहें तथा व्यर्थ को सदाकाल के लिए विदाई दे, सदा समर्थ बनने की बधाई स्वीकार करें। बापदादा और हम सबकी यह प्रिय पत्रिका दिनों-दिन उन्नति को प्राप्त करती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ◆ शान्तिदूत का देहावसान (सम्पादकीय)..... 4
- ◆ मृत्यु: अनिवार्य परिवर्तन..... 7
- ◆ तू प्यार का सागर है..... 9
- ◆ प्रश्न हमारे, उत्तर आपके..... 10
- ◆ पुरुषोत्तम संगमयुग..... 12
- ◆ 'पत्र' संपादक के नाम..... 15
- ◆ विवेक को नष्ट करता है..... 16
- ◆ बाबा ने जीना सीखा दिया..... 17
- ◆ एकान्त..... 18
- ◆ हंस-समूह का शान्तिपूर्ण..... 20
- ◆ बढ़ रही है विश्व में..... 22
- ◆ एकाग्रता की शक्ति..... 25
- ◆ डिप्रेशन: जानकारी और..... 26
- ◆ हमारा घर टूटते-टूटते..... 28
- ◆ ओमशान्ति प्रॉमिस..... 29
- ◆ सचित्र सेवा समाचार..... 30
- ◆ धैर्य रखें, हिम्मत न छोड़ें..... 32
- ◆ 'राममाला' ले आई..... 34

नये सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

शान्तिदूत का देहावसान

जैसे समुद्र ऊपर से धीरे-गम्भीर होते हुए भी अपने अंदर विशाल सामुद्रिक सम्पदा समाए रहता है, इसी प्रकार का व्यक्तित्व था दादी शान्तामणि का। शान्ति और शीतलता की चैतन्य मूर्ति बन, शान्तिवन के बेहद प्रांगण में वरदानी भवन में सदा वरदान लुटाती हुई दादी के अंदर प्रेम, सत्यता, करुणा, मिलनसारिता, सहनशीलता, नम्रता जैसे अनेक गुणों की अपार संपदा समाहित थी। आपका चेहरा ही चैतन्य म्यूजियम बन सदा सबको आकर्षित करता रहा। आपका मौन निमंत्रण ऐसा था कि कोई भी आत्मा निःसंकोच आपसे मिलकर तृप्त हो जाती थी। कम शब्दों में, मुसकान भरे चेहरे से दृष्टि-मिलन करते हुए आप हर मिलने वाले के दिल पर गहरी छाप छोड़ देती थीं। चेहरे का नूर और वाणी का ओज – आपकी बढ़ती आयु को सदा ही झुठलाते रहे। आपका कद, चेहरा और स्वर मातेश्वरी जगदम्बा से काफी समानता रखता था। आपसे मिलकर मातेश्वरी जगदम्बा से मिलने का अनुभव हो जाता था।

**यज्ञ के आदिकालीन समर्पित
परिवार की सदस्या**

सिंध-हैदराबाद के एक

प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित सखरानी परिवार में आपका जन्म हुआ। आपके दादा जी का नाम था प्रताप सखरानी जो बहुत ही भद्र, सरल और आस्तिक थे। पिताजी का नाम था रीझूमल सखरानी और माताजी का नाम था सती सखरानी। लौकिक माता-पिता का जीवन बहुत सुखमय था और उनको देख सब कहते थे कि ये तो जैसे कि श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण की जोड़ी है। आपके पिताजी कठोर परिश्रमी और बुद्धिमान थे। उनका व्यवसायिक केन्द्र श्रीलंका में था, जो बहुत सफल था इसलिए लौकिक परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। आप पाँच बहनें और एक भाई थे। भाई सबसे बड़े थे, उनका नाम था जगूमल सखरानी। बहनों के नाम थे – देवी, कला, लीला (दादी शान्तामणि), लक्ष्मी (दादी सन्देशी) और भगवती (अलौकिक नाम ज्योति)। आपकी एक मौसी थी जिसका नाम था रोचा (रुक्मिणी) जो असमय ही विधवा हो गई थी। उनकी तीन बच्चियाँ थी। बड़ी बच्ची पार्वती जिसकी शादी हो चुकी थी, फिर थी राधे (जगदम्बा सरस्वती) और फिर थी गोपी। इस प्रकार, आप जगदम्बा सरस्वती की मौसेरी बहन थी। आपकी दूसरी मौसी का नाम था



ध्यानी, वह भी शुरू से यज्ञ में समर्पित थी। ध्यान में जाने के कारण उनका नाम ध्यानी पड़ा। बाबा उन्हें मिश्री कहते थे क्योंकि वे बहुत मीठी थी। इस प्रकार आप, यज्ञ के आदिकालीन पूर्ण समर्पित परिवार की एक विशेष समर्पित सदस्या थीं।

एक साक्षात्कार से

परिवार की दिशा परिवर्तन

लौकिक जीवन में आपके पिताजी बड़े गुरुभक्त थे। मकान में एक विशेष कोठरी को गुरुघर कहा जाता था। रोज़ शाम को पिताजी के निर्देशानुसार सभी बच्चे उस कमरे में प्रार्थना करते थे और प्रार्थना के पश्चात् माँ प्रतिदिन 'गुरुमुखी ग्रंथ', 'जप साहेब', 'सुखमणि' आदि धर्म पुस्तकें पढ़कर समझाती थी। इस प्रकार छोटी आयु से ही आप सत्संग प्रेमी और धर्म-प्रेमी थीं। ब्रह्मा बाबा के साथ आपके

पिताजी का बहुत अच्छा संबंध था। हैदराबाद में सत्संग की शुरुआत के बाद ब्रह्मा बाबा जब एकांतवास के लिए कश्मीर गये, तब वहाँ आपके पिताजी की मुलाकात ब्रह्मा बाबा से हुई। ब्रह्मा बाबा ने उनको 'बेटा' शब्द से संबोधित किया। यह संबोधन सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि वे दोनों ही समान उम्र के थे। वास्तव में ब्रह्मा बाबा के तन में अवतरित परमात्मा शिव ने उन्हें 'बेटा' कहकर संबोधित किया था। उसके बाद बाबा की दृष्टि द्वारा आपके पिताजी ने दिव्य धाम का साक्षात्कार किया। इस साक्षात्कार के बाद आपके पिताजी के साथ-साथ आपके सारे परिवार की दिशा ही पूर्णतः बदल गई और तन-मन-धन सहित आपका संपूर्ण परिवार 'ओम मण्डली' में समर्पित हो गया।

बाबा को श्रीकृष्ण रूप में देखा

सन् 1936 में जब आपने अपनी लौकिक माँ के साथ ब्रह्मा बाबा को देखा तो आपको जन्म-जन्म के सच्चे पिता के मिलने की अनुभूति हुई और बाबा को स्थूल नेत्रों से ही श्रीकृष्ण के रूप में देखा। फिर तो आप रोज स्कूल से लौटते हुए, बाबा के पास जशोदा निवास में जाती रहीं। बाबा ने ही आपको आत्म-अनुभूति कराई। बाबा ने कहा, आत्मा ही शरीर को चलाती है। मन, बुद्धि, संस्कार की मालिक आप आत्मा हैं। बाबा ने

शरीर रूपी बाजे की तुलना हारमोनियम से करके समझाया। बाबा ने अच्छे-बुरे संस्कारों का ज्ञान दिया। बाबा ने अपने हस्तों से एक कागज़ पर देवलोक, मनुष्य लोक और पाताल लोक का चित्र बनाया और पूछा, अभी आप मनुष्य लोक में हो, बताओ, कहाँ जाना चाहते हो? देवलोक में या पाताल लोक में? आपकी बुद्धि ने फौरन निर्णय दिया कि देवलोक में जायेंगे। बाबा ने कहा, अगर देवलोक में जाना है तो देवी-देवताओं जैसा बनना है और दैवी गुण-संस्कार धारण करने हैं, पढ़ाई पढ़नी है। आपका उसी दिन से ईश्वरीय पढ़ाई से बहुत प्यार हो गया और नियमित बाबा के पास जाती रहीं और बहुत ही लगन से ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ती रहीं।

पाँच चिड़ियाओं में से एक

ईश्वरीय ज्ञान की शुरुआत से पहले ब्रह्मा बाबा ने लौकिक स्कूल के लिए एक बिल्डिंग बनाई थी। बाद में उसे ही ओम निवास कहा गया। बाबा ने कश्मीर में रहते ही उस भवन में बोर्डिंग खोलने की तथा सत्संग में आने वाली माताओं के बच्चे-बच्चियों को रूहानी तथा जिस्मानी दोनों प्रकार की शिक्षा देने की योजना बनाई। सन् 1937 में दीवाली के दिन बाकायदे बोर्डिंग का उद्घाटन हुआ। बच्चों को पढ़ाने के निमित्त जिन पाँच दादियों को नियुक्त किया गया, उनमें से एक आप

भी थीं। बाबा आपकी टीम को पाँच चिड़ियायें कहकर संबोधित करते थे। तब आपकी आयु 14 वर्ष की थी।

सचली कौड़ी और हर की पौड़ी

झाड़ के चित्र में मम्मा-बाबा के साथ तपस्यारत अष्ट रत्नों में आप भी विराजमान हैं। आप कराची में यज्ञ कारोबार भी संभालती थीं। आपका शुरू-शुरू में ध्यान-दीदार का भी पार्ट रहा। बाद में वह पार्ट हल्का हो गया। बाबा कहते थे, इस बच्ची ने जब से यज्ञ में कदम रखा है, अपने शान्त स्वरूप के द्वारा अपनी अनेक विशेषताओं को प्रकट किया है। आपके गुणों को देख बाबा आपको सचली कौड़ी (बहुत सच्ची और साफ दिल) कहा करते थे। आप बहुत ही मिलनसार तथा गुणग्राही होकर यज्ञ में चलीं। हर बात में संतुष्ट रहना और संतुष्ट करना, आपका विशेष गुण रहा। बाबा आपको 'हर की पौड़ी' भी कहते थे। यूँ तो गंगा बहती जाती है और भक्तों की भावना पूर्ण करती जाती है परंतु गंगा का एक ऐसा हिस्सा भी है जो 'हर की पौड़ी' कहलाता है। वहाँ गंगा स्थिर रहती है, दूर-दूर से, दिशा-दिशा से भक्तजन वहीं आकर डुबकी लगाते हैं और अपनी प्यास बुझाते हैं। आप भी मधुबन महातीर्थ पर, विश्व के कोने-कोने से आने वाले ब्रह्मावत्सों को, 'हर की पौड़ी' बन ज्ञान-डुबकी लगवाती रहीं, शान्ति

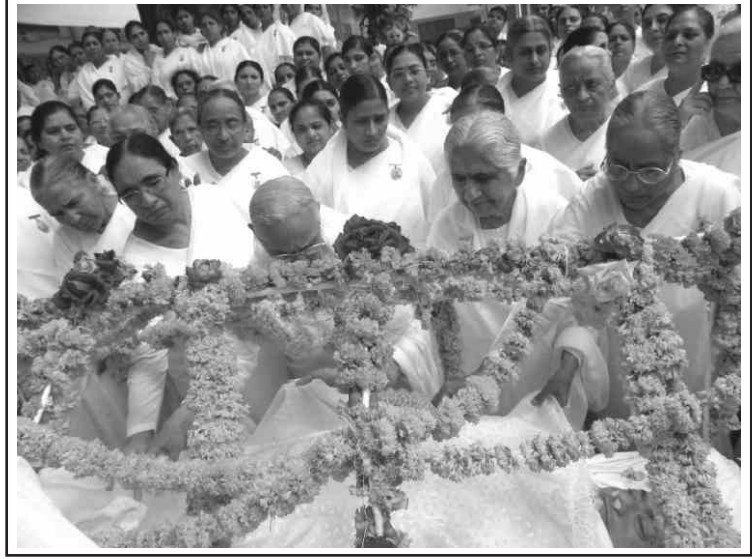
और शीतलता के वरदान लुटाती रहीं।

लखनऊ में सेवा

यज्ञ के माउंट आबू स्थानांतरित होने के बाद, अन्य दादियों की तरह आप भी लखनऊ में सेवार्थ गईं और अनेक परीक्षाओं को पार करते हुए, एक बल एक भरोसे रह 17 वर्षों तक आप वहाँ सेवारत रही। बाबा ने एक बार आपको कोलम्बो (श्रीलंका) भी सेवार्थ भेजा था जहाँ आप ईश्वरीय सेवा का बहुत अच्छा बीज बोकर आईं। प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद आप मधुबन में ही स्थाई रूप से निवास करने लगी।

कर्त्तापन के भान से परे

शान्तिवन निर्मित होने के बाद, पिछले 15 वर्षों से आप विशाल शान्तिवन प्रांगण में निरंतर सेवारत रहीं। आप कभी भी – यह ऐसा, वह वैसा – इन बातों में नहीं आईं। किसी को देख यह भी नहीं सोचा कि उसको यह मिला, मुझे क्यों नहीं। कम से कम साधनों में सदा साधनामूर्त रही। कभी क्यों, क्या, कैसे नहीं कहा। कोई भी समस्या लेकर आता तो अपने शान्त स्वरूप द्वारा उसे हल्का कर देती थीं और कहती थीं, बाबा सदा साथ है। आपने याद और सेवा के द्वारा सबके दिलों में अपना यादगार बनाया। बाबा और मुरली के अलावा, जीवन भर आपके दिल में और कुछ रहा ही नहीं। पिताव्रत और सतीव्रत का



पक्का पालन किया। आपमें समाने की शक्ति बहुत थी। जो बात आपको बता दी, वह आपके सिवाय आगे कहीं नहीं जाती थी। बाबा को सुनाने के अलावा आप किसी की बात को इधर-उधर नहीं करती थी। किसी ने आपको कभी कड़वा या जोर से बोलते नहीं देखा। कभी किसी को आँख नहीं दिखाई। सबको प्यार दिया, शान्ति दी और कारोबार ऐसे किया जैसे कुछ भी कर नहीं रही हैं। कर्त्तापन के भान में न होने के कारण हरदम शान्ति की शक्ति से भरपूर रहीं। एक बार आपकी बाजू में तकलीफ थी पर कोई घबराहट नहीं। आप सहनशीलता की देवी थी। इस पुराने शरीर को कई बार टांका-चत्ती लगे पर आप सदा शान्ति की एकरस अवस्था में साक्षीद्रष्टा बन पार्ट बजाती रही।

पिछले एक वर्ष से आपका स्वास्थ्य ऊपर-नीचे रहता था परंतु चेहरे से कभी नहीं लगा कि आपको कोई तकलीफ है, कभी मुख से नहीं कहा। पेशेन्ट होते भी आप अद्भुत पेशेन्स में रहीं। सारे ब्राह्मण परिवार की दुआयें आपको सदा ही मिलती रहीं। पंद्रह जून, 2010 को आप देह के हृद-बंधन से मुक्त हो बापदादा की गोद में समा गईं। आप 87 वर्ष की थीं। अब आप बेहद सेवा में उपस्थित हो शान्तिवन सहित सारे विश्व को सकाश देती रहेंगी। आपके दिव्य कर्त्तव्यों की स्मृतियाँ, रूहानी नूरानी नजरें, धरती जैसा धैर्य और सहनशीलता सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। यह श्रद्धानत लेखनी आपके गुण-स्तंभ जैसे जीवन को कोटि-कोटि प्रणाम करती है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मृत्यु : अनिवार्य परिवर्तन

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

भारत से लौटते समय, अपने गुरु की आज्ञानुसार, सिकंदर किसी संन्यासी को अपने साथ यूनान ले जाना चाहता था। उसने एक संन्यासी के पास अपने दो दूतों को यह संदेश देकर भेजा। संन्यासी ने दूतों को 'ना' कहकर लौटा दिया। क्रोध से भरा सिकंदर, तलवार लिए स्वयं संन्यासी के पास पहुँचा और बोला, मैंने अपनी आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं सुना, उल्लंघन का परिणाम है, मेरी तलवार तुम्हारी गर्दन को धड़ से अलग कर देगी।

संन्यासी ने कहा, अरे पगले, जिस गर्दन को तू अलग करने की बात कह रहा है, उससे तो हम बहुत पहले से अलग हो चुके हैं। अगर तू इसे काटेगा भी तो जिस तरह कटकर गिरती हुई गर्दन को तू देखेगा, उसी तरह मैं भी देखूँगा। इस अभिमान में मत रहना कि तुम मुझे काट दोगे। सिकंदर हार कर वापस लौट गया।

वह संन्यासी मरने से नहीं डरा, क्यों? क्योंकि संन्यासी को मैं (आत्मा) और मेरे (शरीर) के अलग-अलग होने का अनुभव था। डरता वही है जो शरीर को मैं मानकर, शरीर और आत्मा को एकाकार कर लेता है।

परिवर्तन प्रिय लगता है

मृत्यु की ठीक से परिभाषा समझी

जाए तो इस परिवर्तनशील जगत के अन्य परिवर्तनों की भाँति यह भी एक परिवर्तन ही है। परिवर्तन हमें प्रिय लगता है। हमें बच्चे की मासूमियत तथा पवित्रता आकर्षित करती है परंतु इस मासूमियत और भोलेपन के प्रति भी हमारी मन ही मन कामना है कि यह भले बदल जाए अर्थात् बच्चा बड़ा हो जाए। हमने अन्य बच्चों को बड़े होते देखा है, उनके बचपन को मरते देखा है पर फिर भी हम इस परिवर्तन को चाहते हैं। किसी कारण से यह परिवर्तन (विकास) रुक जाये तो चिन्तित होते हैं और चिकित्सकों पर धन लुटाते हैं।

मृत्यु भी एक ऐसा ही परिवर्तन (विकास) है। जब हम सदा बच्चे नहीं रह सके, सदा जवान नहीं रह सके तो क्या सदा वृद्ध अवस्था में रहना चाहेंगे? नहीं। जब बचपन मरा और जवानी आई तो हम नहीं रोए, जब जवानी मरी और बुढ़ापा आया तो भी हम नहीं रोए तो फिर आज जब बुढ़ापा मरकर, पुनर्जन्म अथवा पुनः बालपन आ रहा है तो रोने की क्या आवश्यकता है। कुछ नया पाने के लिए पुराना छोड़ना ही पड़ता है।

डरें नहीं, चुनौती समझें

मृत्यु पर रोना ऐसे ही है जैसे परीक्षा भवन में बैठे विद्यार्थी के सामने उस पुस्तक का सवाल आ जाता है

जिसे छूने से वह सदा कतराता रहा। मृत्यु भी जीवन रूपी पुस्तक का वह अध्याय है जिसे हम छूते नहीं, पढ़ते नहीं, जानने की कोशिश करते नहीं, इस पर चिन्तन करके इसके सरलीकरण का रास्ता निकालते नहीं, मात्र इससे डरते हैं, इसका जिक्र करना अशुभ समझते हैं और इसके भय से त्रस्त रहते हैं। मृत्यु अंत नहीं, मात्र पड़ाव है। यह केवल ओढ़े हुए आवरण का अंत है। हम जीवन के हर पड़ाव की चाहे जन्म, शिक्षा, शादी, नौकरी – सभी की पूर्व तैयारी करते हैं तो मृत्यु रूपी पड़ाव की भी पूर्व तैयारी कर लेनी चाहिए। मृत्यु के भय को जीतने का उपाय उससे आँखें चुराने में नहीं बल्कि उसे चुनौती के रूप में स्वीकार करने में है।

सच्ची सहानुभूति

मृत्यु एक घटना है, आप चाहें तो इसे दुर्घटना भी कह सकते हैं। जब कोई भी घटना घट जाती है तो कोई उपाय किया जाता है, उससे कुछ सीखा जाता है, मात्र रो लेना तो निष्क्रियता है। और समाज ने रोने की जिस औपचारिकता को बनाके रखा है, क्या उसके पीछे सचमुच कोई सहानुभूति भी है? यदि निकट संबंधी की मृत्यु पर कोई रोए ना, या रोने का नाटक ना करे तो उसकी तरफ

उंगलियाँ उठने लगती हैं। ऐसे समय में रोने या रुलाने की नहीं बल्कि खुद के आँसुओं को थामकर, दूसरे के भी आँसू पोंछने की ज़रूरत है। हाथ से पोंछने की बात नहीं है, अपने कर्मों से पोंछने हैं। मान लीजिए, दो छोटे बच्चों को छोड़कर एक नौजवान पिता चला गया। बेसहारा पत्नी गमगीन है, ऐसे में हमारा कर्तव्य क्या है? क्या बेसहारा हो जाने का अहसास दिलाकर उसे और रुलाना या स्वयं उसका सहारा बन जाने का विश्वास दिलाना और अविनाशी सहारे ईश्वर पर उसका विश्वास जमाना? उसके बच्चों को देख-देख आँसू बहाना या उनकी पालना के लिए हाथ बढ़ाना? किसी के काँटे की चुभन, स्वयं को काँटा चुभाने से खत्म नहीं होती वरन् काँटा निकालकर, घाव की मरहम-पट्टी करने से होती है। अतः सच्ची सहानुभूति तो यही है कि यदि आप भौतिक रूप से समर्थ हैं तो उसको भौतिक सहयोग दीजिए; मानसिक, आध्यात्मिक रूप से समर्थ हैं तो मनोबल और ईश्वरीय बल दीजिए, मात्र आँसू बहाकर अपने कार्य की इतिश्री मत कर लीजिए।

आत्मपंछी का अस्थायी डेरा

यह शरीर काँच के घर के समान है जो कभी भी, किसी भी ठोकर में चकनाचूर हो जाने वाला है। जैसे बर्फ के टुकड़े को रेगिस्तान की गर्मी में रख दिया जाये तो पिघलने में कितनी

देर लगेगी? बड़ा होगा तो एक-डेढ़ घंटा लगेगा, छोटा होगा तो 5-7 मिनट में पिघल जायेगा। कुछ देर बाद वहाँ नामोनिशान भी नहीं रहेगा। शरीर का नामोनिशान भी यँ ही मिट जाता है। इस सत्य को न जानने वाला ही शरीर छोड़ने के नाम पर चीख-पुकार करता है, मृत्यु उसे नारकीय पीड़ा के समान लगती है। आत्म-ज्ञानी को इस कसैली देह में कोई स्वाद नज़र नहीं आता। उसे जीते-जी यह भान हो जाता है कि मुझ आत्म-पंछी का यह देह अस्थायी डेरा है। इससे कभी भी उड़ान भरनी पड़ेगी इसलिए वह इसमें रहता है पर आसक्त नहीं होता। अर्थी को देखकर बच्चों का हाथ पकड़कर भीतर कर लेने के बजाय उन्हें भी बताओ कि यह दशा आने से पहले-पहले इस शरीर से पुण्य जमा करने हैं, प्रभु मिलन का सुख लेते हुए श्रीमत पर चलना है।

मृत्यु है स्थानान्तरण

जब से आत्मा ने शरीर में रहना शुरू किया, जीवन का प्रारंभ हो गया और जिस दिन आत्मा ने शरीर में से अपने निवास को समेट लिया, जीवन समाप्त हो गया। मृत्यु को परिभाषित करने वाले शब्दों से ही ज़ाहिर होता है कि मृत्यु शरीर की होती है, न कि आत्मा की। हम कहते हैं देहांत (देह का अन्त), मरण (प्राणों का अलग

होना), दिवंगत (परलोक की ओर प्रस्थान), देहावसान (देह का अवसान) आदि-आदि। शरीर प्रकृति प्रदत्त है। मृत्यु के बाद वह वापस अपने स्रोत में जा मिलता है। जो चीज़ जिसकी थी, उसी के पास चली गई, हमारा अर्थात् आत्मा का तो कुछ गया नहीं। एक शरीर से निकलकर, दूसरे शरीर में जाने के बीच की जो अवधि है, वास्तव में उसे मृत्यु नाम दे दिया जाता है। लौकिक दुनिया में एक अधिकारी पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा कर दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होता है। मृत्यु भी एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरण ही है। अंतर इतना ही है कि अल्पकाल के उस स्थानांतरण में स्थान की हमें जानकारी रहती है और मृत्यु रूपी स्थानांतरण में स्थान की जानकारी रहती नहीं है।

देह और दुनिया में

हम मेहमान हैं

घड़ी की टिक-टिक संकेत कर रही है कि जीवन निरंतर कट रहा है, घट रहा है। हम इस देह में और दुनिया में मेहमान हैं। मेहमान को जो साधन-सुविधायें उपलब्ध होते हैं, उनमें वह अस्थायीपन को स्पष्ट देखता है और ममत्व को उत्पन्न होने नहीं देता। वह जानता है कि यह मेरा स्थान नहीं है, मेरा यहाँ से जाना निश्चित है। इसी प्रकार, हममें से प्रत्येक का यहाँ से

जाना निश्चित है, जिस लोक से आए हैं, वहाँ लौटना निश्चित है।

‘मृत्यु’ पर प्रयोग

जैसे एक मेधावी विद्यार्थी परीक्षा भवन में जाने से पहले ‘परीक्षा पर पूर्व प्रयोग’ करता है। जो प्रयोग उसे परीक्षक के सामने करके दिखाना होता है, उसे घर में, अकेले में कई बार कर-करके देख लेता है। इससे उसमें आत्मविश्वास आ जाता है। इसी प्रकार, आध्यात्मिक समझ वाला व्यक्ति मृत्यु से पूर्व ही ‘मृत्यु पर प्रयोग’ दिन में कई बार करता है। अंतिम रूप से देह को त्यागने, देह के संबंधों को भूलने, देह के पदार्थों से अनासक्त होने से पहले वह कई बार इनसे न्यारा होने का अभ्यास कर लेता है। इससे उसका भय समाप्त हो जाता है और आत्मविश्वास आ जाता है कि जैसे मैं अकेली आत्मा आई थी, ऐसे ही अकेले जाने में आनन्द ही आनन्द है।

देह त्यागने के बाद जिस परमधाम अथवा परलोक में जाना है, देह से न्यारा होकर वह अनेक बार वहाँ विचरण कर चुका होता है। उस लोक की चिर शान्ति का अनुभव कर चुका होता है, घंटों-घंटों मन को मशगूल करके वहाँ ध्यान लगा चुका होता है। इस लोक के कोलाहल से पार, गहन शान्ति का वो लोक उसे बार-बार आकर्षित करता है। वह कार्य-व्यवहार करते भी बीच-बीच में वहाँ चक्कर लगाया करता है। इस

अनुभूतिपूर्ण जानकारी के कारण उसके मन में ना तो यह प्रश्न रहता है कि पता नहीं कहाँ जाना होगा, ना यह डर रहता कि पता नहीं मेरे साथ क्या होगा। जैसे लोग दूसरे शहर, दूसरे देश जाने की तैयारी करते हैं, ऐसे ही ज्ञानी व्यक्ति भी, ज्ञान के आधार से उस परलोक जाने की तैयारी में लगा रहता है। इस लोक के व्यवहार को संभालते-संभालते ही वह परलोक रूपी गंतव्य पर नज़र टिकाये रहता है, पुण्य रूपी पेटी-बिस्तर बाँधकर रखता है और इशारा मिलते ही उड़ चलता है।

अवतरित हैं भगवान

सृष्टि नाटक अब अन्तिम चरण में है। चारों युगों का चक्र पूरा हो चुका

है। भगवान के आगमन का युग, कर्त्तव्य का युग संगमयुग भी पूरा होने ही वाला है। अब हम सभी आत्माओं को घर जाना ही है। जैसे सांझ होने पर माँ, बच्चों को घर बुला लेती है, इसी प्रकार सृष्टि की इस सांझ वेला में स्वयं भगवान भी हम बच्चों को घर ले चलने के लिए सृष्टि पर अवतरित हैं। पहले हमें अवतरित भगवान से साकार में मिलन मनाना है और फिर उनकी पलकों पर बैठ उनके साथ घर परमधाम जाना है। सृष्टि महापरिवर्तन के दौर से गुज़र कर सतयुग में प्रवेश करने वाली है। परमधाम घर से फिर हमें सतयुगी दुनिया में देवी-देवताओं के रूप में अवतरित होना है। ❖

तू प्यार का सागर है

ब्रह्माकुमार सदाशिव, उदियापुर अज्ञाय लालगंज (उ.प्र.)

शुभ कर्मों से, 15 नवंबर 2009 को पहली बार बाबा से दिव्य मिलन मनाया। यह जीवन की सबसे बड़ी प्राप्ति एवं अनुभूति साबित हुई। मधुबन का दिव्य वातावरण, निःस्वार्थ प्रेम, सच्चा अपनापन देखकर मैं तो दंग रह गया। अब तो मन यही कहता है कि बाबा, आपने ढूँढही निकाला, परमात्म प्यार में रंग दिया, पिंजरे से निकालकर आसमान दिखाया, चौरासी जन्मों से प्यासी आत्मा को तृप्त किया, अलौकिक पुनर्जन्म मिला, जीवन जीने की कला मिली। बाबा आपके प्यार से वो अनुभूति, सुख-शांति का खज़ाना मिला जो इस सृष्टि का धनी से धनी व्यक्ति अपने बच्चों को नहीं दे सकता, वो भी निःस्वार्थ। प्यारा बाबा ऐसा मिला कि एकदम जीवन ही बदल गया। बाबा मिला जहान मिल गया। जो पाना था पा लिया, अब क्या बाकी रहा। अब तो मन यही गाता है, तू प्यार का सागर है ..। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर आपके

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुथियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक



प्रश्न:- पास्ट को यदि भूल जायेंगे तो स्वदर्शन चक्रधारी कैसे बनेंगे?

उत्तर:- यह भी समझ चाहिए कि कौन-से पास्ट को भूलना है और कौन-से पास्ट को याद करना है। पिछले 63 जन्मों में हमारे से जो विकर्मों का खाता बना है, उसे याद नहीं करना है पर उन विकर्मों का विनाश करना है और अभी कोई विकर्म नहीं करना है। अगर पास्ट के उन विकर्मों को याद करेंगे तो अभी भी हो जायेंगे। मेरे साथ किसी ने विकर्म किया या मैंने किसी के साथ विकर्म किया तो उसकी याद से विकल्प भी आ जायेगा, वह दृश्य भी सामने आ जायेगा। स्वदर्शन चक्र फिराना माना मैं तो देवता थी, उस राजभाग को गँवाया तो कंगाल बन गई। माया ने वार कर दिया पर अभी तो मुझे माया पर जीत पानी है। कई कहते हैं, हमें बुरे ख्याल क्यों आते हैं? तुम याद करते हो तो याद आते हैं। हमारा अपने पर ध्यान इतना तीव्र और पावरफुल हो कि बिना चाहे

ख्याल आ ही नहीं सकता। अपने संकल्पों को बैठकर शुद्ध और पावरफुल बनाओ। यह मेहनत करो। संकल्प एकदम शुद्ध हो, राइट हो, श्रेष्ठ हो, जो अशुद्ध संकल्प आना सदा के लिए बंद हो जाये। मेरे पुरुषार्थ में बाधा डालने वाला मेरे पास आये ही नहीं। पुरुषार्थ में कभी भी ढीलापन नहीं आये। दिन-रात, सुबह-शाम अपने आप पर अटेंशन रखना है। टेंशन नहीं रखना है, टेंशन वाला पुरुषार्थ नहीं। पुरुषार्थ में खुशी होनी चाहिए, दिल से होना चाहिए और राइट तरीके से होना चाहिए। दिन-प्रतिदिन मैं फील करूँ कि बाबा ज्ञान-योग का अच्छा अनुभव करा रहा है। ज्ञान-योग से बुद्धि का अभिमान पैदा नहीं होता बल्कि बुद्धि ठीक रहती है। ज्ञान रत्न चुगने का ढंग आ गया है। मधुबन अनुभव करने और कराने का स्थान है, कोई भी पुरानी बात सुनने-सुनाने की आवश्यकता नहीं है। बाबा साकार में भी 'पास्ट इज पास्ट' का बहुत महत्त्व रखता था। अव्यक्त

बनकर भी घड़ी-घड़ी यही स्लोगन याद कराता है। एक बार मैं जून मास में मधुबन में थी। झोंपड़ी में बाबा के पास बैठी थी, कोई सेवा समाचार बाबा को सुना रही थी। बाबा ने कहा, बच्ची, तुमने यह समाचार लिखा था ना, फिर अब क्यों सुना रही हो? अभी भी मुझे वह घड़ी याद आती है कि बाबा ने कहा, जो बात एक बार सुना दी, दुबारा क्यों सुना रही हो? कई, एक बात को दस जगह सुनाते हैं। मैं आत्मा हूँ, मुझे परमधाम जाना है, इन बातों को बार-बार मन में रिपीट करें, बाकी जो बातें बीती उनको फुलस्टॉप लगाइये।

प्रश्न :- क्रिटिकल नेचर की जड़ क्या है? सूक्ष्म में अपने पर और दूसरों पर क्रोध आता है, उसका कारण क्या है? पुराने संस्कारों को कैसे जीतें?

उत्तर:- कई बार हम अपने पुराने संस्कारों को यूज करते हैं। चलते-चलते हमारा पुराना संस्कार जिसके लिए हमने समझा था कि खत्म हो

गया, निकल आता है। अंदर से प्रश्न उठता है कि यह क्यों निकल आया? संस्कार इतना खराब नहीं है लेकिन आज पुरुषार्थ का जो लेवल है, उसके अनुसार वह संस्कार नहीं आना चाहिये था। इसका कारण यह है कि कई बार हम दूसरों के कारण अपने पुराने संस्कारों को यूज कर लेते हैं। क्या करूँ, फलानी बात देखकर मेरा वो संस्कार निकल आया। अगर हम उसको यूज करेंगे तो वह बैठ जायेगा। अगर हम यूज ही नहीं करेंगे तो खत्म हो जायेगा जैसे कि चिंता करने का संस्कार, भारी होने का संस्कार, किसी को हाथ लगाने का संस्कार, अपमान की फीलिंग का संस्कार। दूसरे ने अपमान किया तो हमारा फीलिंग का संस्कार निकल आया। अपमान उसने किया, स्वमान मैंने छोड़ा। तो गलती उसकी नहीं है, गलती मेरी है। उसने अपमान किया तो मैं स्वमान में रहूँ ना! यदि दूसरे के संस्कार के अनुसार मेरा संस्कार काम करता है तो मैं कभी भी अपने संस्कारों को नहीं बदल सकूँगी।

एक बार कोई बहन बाबा से मिल रही थी, किसी के बारे में सुना रही थी कि बाबा एक आत्मा है, घड़ी-घड़ी इंटरफियर करती है, तकलीफ देती है, उसका घड़ी-घड़ी ऐसा ही चलता है। बाबा उसका मुँह देखता रहा, कहा, तुम वो क्यों बन गई हो? जिसकी बात कर रही हो, उसके चिह्न

तुम्हारे चेहरे पर क्यों आ जायें? मेरा हमेशा ध्यान रहता है कि दूसरों की बात सोचकर मेरा चेहरा ऐसा ना बन जाए। हम जिसके बारे में सोचेंगे वैसा ही भाव हमारे चेहरे पर आ जायेगा, यह गलत है। हम योगी कब बनेंगे? इसलिए साक्षी होकर देखो। बाबा को सुनाने से उस आत्मा को बल मिलेगा लेकिन मैं उस आत्मा का रूप न बनूँ। उस इफेक्ट में, उस फीलिंग में मैं न आऊँ, यह सूक्ष्म कोशिश करनी है। जैसे भी देखा जाता है कि हर व्यक्ति अपने कर्म और संस्कार स्वयं ही जाने। उसकी जवाबदारी हमारे ऊपर तो नहीं है। यह उलटा कर्म करता है, इसको ऐसे नहीं करना चाहिए। क्या बाबा ने मुझे कहा है कि तुम ऐसा सोचो। यह सच नहीं बोलता, झूठ बोलता है, ऐसा हम क्यों कहें, भगवान जाने, यह झूठ है या सच। हम अपने आप को फ्री करें। मुझे रांग-राइट की समझ बाबा ने दी है, मेरे से हर कर्म राइट होना चाहिये। अगर दूसरों को देखते रहेंगे तो अपने को कब देखेंगे, बाबा को कब याद करेंगे। अगर हमको सहज राजयोगी बनना है तो ये आँखें देखते भी न देखें, कान सुनते भी न सुनें। इसलिए बाबा कहता है, खुली आँखों से योग करो, खुली आँखें होते भी न देखो। कान खुले हैं तो भी काम लायक बात नहीं है तो नहीं सुनो। कोई सुनाये तो भी नहीं सुनो। अगर कोई किसी की निंदा

करता है तो तुम क्यों सुनते हो। वास्तव में कोई करता भी उसी के आगे है जो सुनता है। जो सुनना ही नहीं चाहता, उसके आगे कोई करता भी नहीं है, यह अनुभव है हमारा।

प्रश्न:- विश्व सेवा में वेल्यूज का क्या महत्त्व है?

उत्तर:- जीवन की रक्षा करने के लिए एक-एक वेल्यू को धारण करो। पीस है तो लव है, लव है तो रिसपेक्ट है। रिसपेक्ट है तो ओनेस्टी है, सिम्पलिसिटी है, सब एक-दो के साथ मिले पड़े हैं। बस, ध्यान रहे अवगुणों को त्यागना और गुणों को धारण करना है जिससे न सिर्फ अपना जीवन बनता है बल्कि औरों के लिए मिसाल बन जाता है। देखकर सीखना आसान है। बाबा ने शुरू से सिखाया, कथनी पीछे, करनी पहले। बुराइयों को खत्म करने का दृढ़ संकल्प करते हैं तो अच्छाइयाँ हमारे पास नहीं आयेंगी तो किसके पास आयेंगी! जिसके दिल में परमात्मा के लिए, खुद के लिए और विश्व सेवा के लिए सदा प्यार है, अच्छाइयाँ उसी के पास जाती हैं। सेवा में अगर हमारे अंदर धारणा है तो सेवा में सफलता मिलती है। रोज सवेरे मैं जैसे ही शिवबाबा को याद करती हूँ तो यह भी देखती, कोई भी वेल्यू मेरे में न रहे, यह हो कैसे सकता! सभी वेल्यूज हमारे लिए शृंगार हैं। भगवान हमारा इतना शृंगार करता है, यह शृंगार ही विश्व सेवा का आधार है।

पुरुषोत्तम संगमयुग और एक धर्म की स्थापना की ज़रूरत

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

प्यारे शिवबाबा ने बताया है कि सतयुगी दैवी दुनिया में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एक दैवी संस्कृति होगी। आज धर्म के अनेक रूप हो गये हैं। साम्यवादी विचारधारा रखने वाले कार्ल मार्क्स ने तो यहाँ तक कहा है कि 'Religion is the opium for the society.' अर्थात् धर्म समाज के लिए अफीम समान है।

कार्ल मार्क्स के इस कथन की वजह यह है कि दुनिया में पहले धर्म, शान्ति स्थापन करने का श्रेष्ठ साधन था लेकिन बाद में धर्म के नाम पर अशान्ति फैलती गई। पहले धर्मस्थापक, धर्म स्थापन करते हैं, बाद में राजाश्रय मिलने पर धर्म का विस्तार होता है। उदाहरण के लिए, कलिंग युद्ध में हुए नर-संहार को देख सम्राट अशोक के मन में पश्चाताप की लहर उठी और उसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया जिससे इसका प्रचार तेजी से हुआ।

इसी तरह रोमन सम्राटों द्वारा ईसाई धर्म को राजाश्रय दिया गया तो इसके अनुयायियों में तेजी से वृद्धि हुई। कई धर्म तो राजाओं के द्वारा ही स्थापन हुए हैं जैसे गौतम बुद्ध राजा थे। महावीर जी भी राजकुमार थे जिन्होंने बाद में जैन धर्म की स्थापना की। मोजेस जिन्होंने यहूदी धर्म की

स्थापना की, वे भी राजा थे।

भारत में मुसलमान लोगों ने आक्रमण किए और अपना साम्राज्य स्थापन किया। वैसे ही व्यापार के साथ धर्म का प्रचार करने के लिए अंग्रेज, फ्रांस के तथा पुर्तगाल के लोग भी आये। इस प्रकार से भारत में मुसलमान तथा ईसाई धर्म वालों ने कम से कम 450 वर्ष तक राज्य किया और आखिर में धर्म के नाम पर ही भारत का, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में विभाजन हुआ।

वर्तमान समय में तालिबान जैसी आतंकवादी संस्थाओं का धर्म के नाम पर कारोबार, ईरान में भी धर्म के नाम पर नेताओं द्वारा जनता के जीवन-व्यवहार को कुंठित करना आदि बातें हो रही हैं। यह तो सब जानते हैं।

ईसाई धर्म के लोगों ने भारत में, गरीबी उन्मूलन के नाम पर 500 से 600 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर, पढ़ाई तथा अन्य सुविधायें देने के नाम पर अनेक लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित किया। अमेरिका के शिकागो शहर में सन् 1971 में जब हम गये तो एक संस्था के मुख्य कार्यकर्ता ने हमसे प्रश्न पूछा कि आपकी संस्था ने अब तक कितने लोगों का धर्म परिवर्तन कराया है।

हमने धर्म परिवर्तन का अर्थ पूछा तो उन्होंने बताया कि एक तो अन्य धर्म के लोगों को ईसाई धर्म के प्रति आकर्षित करना और दूसरा, ईसाई धर्म की अन्य शाखाओं से उनकी शाखा में परिवर्तन करना। आगे उन्होंने बताया कि हम हर वर्ष 3-4 लाख लोगों का इस प्रकार धर्म परिवर्तन करते हैं। हमने उन्हें बताया कि हम धर्म परिवर्तन नहीं करते बल्कि व्यक्तियों को अच्छा इंसान बनाते हैं, उनके जीवन में जो भी बुराइयाँ हैं, उन्हें दूर करते हैं अर्थात् हम एक बुरे हिन्दू को अच्छा हिन्दू बनाते, बुरे मुसलमान को अच्छा मुसलमान बनाते तथा बुरे ईसाई को अच्छा ईसाई बना देते हैं। हम धर्म परिवर्तन को नहीं मानते परंतु जीवन परिवर्तन को मानते हैं क्योंकि जब तक मनुष्य के अंदर वैचारिक परिवर्तन नहीं होगा तब तक उनकी धर्म की मान्यताओं में परिवर्तन करने से ज्यादा लाभ नहीं हो सकता। तब वे लोग हमारी बात को सुनते ही रहे।

हिन्दू धर्म में, धर्म की एक परिभाषा के अनुसार सच्चा धर्म वही है जिससे जीवन में धारणा हो। दूसरी परिभाषा में धर्म के 14 लक्षण बताये गये हैं। लोकमान्य तिलक जी ने बताया है कि पहले हिन्दू धर्म को

नारायणी धर्म कहते थे, बाद में उसका नामांतरण हुआ और उसको देवी-देवता धर्म कहने लगे। बाद में हिन्दू धर्म में शैव, वैष्णव आदि संप्रदाय बन गये। इन संप्रदायों की विचारधारा इतनी जड़ बनती गई कि वैष्णव संप्रदाय में 'शिव' शब्द भी नहीं बोला जाता और शिव के मंदिर से अगर धूप-अगरबत्ती की सुगंध आती है तो वैष्णव अपने नाक पर रूमाल रख लेते हैं। मुसलमान धर्म का भी शिया, सुन्नी और सूफी आदि संप्रदायों में विभाजन हुआ और बाद में बोहरा, आगाखां आदि अनेक पंथ बन गए। ईसाई धर्म में भी विभाजन हुआ है। अमेरिका के सेक्रामेन्टो शहर में 700 चर्च हैं। एक ही धर्म की इतनी शाखायें एक ही शहर में हैं।

एक लेखक ने लिखा है कि आज के समय में धर्म के नाम पर कम से कम 30 जगहों पर खून की नदियाँ बहती हैं। ग्यारह सितंबर के दिन अमेरिका में आतंकवादी कांड हुआ जिसमें वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की दो गगनचुंबी इमारतें धराशायी हो गईं और 3,500 आत्माओं ने शरीर त्याग दिया। ये भी सब जानते हैं। आज भी ऐसी विचारधारा वाले लोग हैं जो धर्म के नाम पर अशान्ति फैलाना चाहते हैं क्योंकि उनकी विचारधारा में, धर्म के नाम पर हिंसा को पाप नहीं, पुण्य माना गया है। दूसरी तरफ अनेक धर्म नेतायें सर्वधर्म

सम्मेलन करते रहते हैं। शिकागो में 11 सितंबर 1893 को विश्व धर्म सम्मेलन हुआ था जिसमें स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व बंधुत्व की भावना का प्रचार किया। उसके 100 वर्ष पूरे होने पर सन् 1993 में शिकागो में फिर से विश्व धर्म सम्मेलन हुआ जिसमें दादी प्रकाशमणि, भ्राता जगदीश जी आदि डेलीगेट्स के रूप में गये जिसके आयोजन में शिकागो सेन्टर के भाई-बहनों ने अच्छा पार्ट बजाया। सन् 1954-55 में जापान में अनानायक संस्था द्वारा विश्व धर्म सम्मेलन हुआ था जिसमें दादी प्रकाशमणि, दादी रतनमोहिनी, भ्राता आनन्द किशोर जी गये थे। मैं तथा ब्रह्माकुमारी ऊषा जी ने भी सन् 1971 में अनानायक संस्था के मुख्यालय का दौरा किया। अन्य कई स्थानों पर भी धर्मसम्मेलन होते रहते हैं क्योंकि कई धर्मनेतायें समझते हैं कि धर्म के नाम पर हिंसा बंद होनी ही चाहिए और आपस में चर्चा करके उस पर कार्य किया जाये। लोर्ड टेलीसन ने तो अपनी एक कविता में यह मंतव्य व्यक्त किया है कि धर्म की एक विश्व संसद होनी चाहिए ताकि सभी धर्म के नेता वहाँ आकर प्रेम से एक-दो के विचारों को सम्मानित करें।

थोड़े समय पहले एक प्रश्न पूछा गया कि सर्वश्रेष्ठ धर्म क्या है? तब दलाई लामा ने उत्तर दिया कि सर्वश्रेष्ठ धर्म वही है जो आपको एक अच्छा

इंसान बनाता है और भगवान के बहुत करीब ले जाता है। उन्होंने यही कहा कि सत्य से बड़ा कोई भी धर्म नहीं है। इस विश्व विद्यालय की सेवाओं को देख कई लोग पूछते हैं कि आपके ईश्वरीय कारोबार में धर्म भेद क्यों नहीं है। आपके विश्व विद्यालय का ज्ञान 130 देशों में पहुँचा हुआ है और अनेक धर्म, भाषा, संस्कृति और राजनैतिक विचारधाराओं के बीच आप अपनी ईश्वरीय सेवाओं में कैसे एकता लाते हैं? तो हम सबको यही बताते हैं कि यह विश्व विद्यालय किसी के जातीय धर्म आदि में हस्तक्षेप नहीं करता परंतु यहाँ सबको मूल्यों के बारे में जागृत किया जाता है क्योंकि बहुत करके सभी मूल्य सार्वभौमिक (Universal) हैं। इस प्रकार मूल्यनिष्ठ जीवन बनने से जाति, धर्म आदि के भेद भूल जाते हैं। जब तक मूल्यनिष्ठ समाज की रचना नहीं हो जाती तब तक धर्म के नाम पर शान्ति विश्व में नहीं हो सकती। शिवबाबा ने कल्पवृक्ष के चित्र में धर्मों का इतिहास हमें दिखाया और सभी धर्मों के प्रति शुभेच्छा रखना सिखाया है क्योंकि देवी-देवता धर्म, वृक्ष का तना है और अन्य धर्म उसकी शाखा-प्रशाखायें हैं। इस विशेष प्रकार की ईश्वरीय विचारधारा के आधार पर जाति, धर्म आदि अनेक प्रकार के भेदों से हम मुक्त हो जाते हैं और एक दैवी परिवार के सदस्य के नाते से दैवी

संस्कृति का निर्माण करते हैं।

समय प्रति समय देश-विदेश में धर्मों में एकता लाने के लिए जो भी सम्मेलन होते हैं, उनमें सभी अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते हैं। फलस्वरूप धर्मों में अनेक प्रकार के मत, पंथ, जाति आदि निर्मित हो गये हैं। मिसाल के तौर पर, आदि शंकराचार्य ने अद्वैत मत प्रस्थापित की परंतु उसके बाद अद्वैत के अंदर भी विशिष्ट अद्वैत, शुद्ध-अशुद्ध अद्वैत आदि अनेक मान्यतायें आ गईं।

धर्म मनुष्य के जन्म से मरण तक के हर कार्यकलाप में होने वाली रीति-रस्म का निर्धारण करता है। जब कोई व्यक्ति शरीर छोड़ता है तो अन्तिम संस्कार संबंधी सभी रस्म-रिवाज उस व्यक्ति के धर्म अनुसार ही की जाती हैं। पारसी धर्म में तो कुएँ में मृत शरीर को रख देते हैं तो कई धर्मों में गंगा नदी में प्रवाहित कर देते हैं। कई जगह पर मेडिकल रिसर्च के लिए देह-दान का कारोबार भी होता है।

ऐसे ही विवाह-संस्कार में भी किसी धर्म में एक पत्नी प्रथा है तो किसी में एक से ज्यादा पत्नी रखने के बारे में नियम बन गये। गुजरात के एक मुख्यमंत्री ने दोबारा शादी की तो अखबार वालों ने उसके विरुद्ध बहुत कुछ लिखा और कोर्ट में इस पर केस भी दाखिल किया। उस मुख्यमंत्री ने कोर्ट में सर्टीफिकेट पेश किया कि हमारी जाति में एक से ज्यादा पत्नी

रखने का अधिकार है, परिणामरूप, कानून भी उसका कुछ नहीं कर सका।

धर्म परिवर्तन के बारे में एक अच्छी बात है। जवाहरलाल नेहरू के पिताजी मोती लाल नेहरू बहुत प्रसिद्ध वकील (अधिवक्ता) थे। उनकी बेटी ने एक मुसलमान के साथ शादी करने का तय किया। मोतीलाल नेहरू बहुत व्यथित हुए। उनको किसी ने सलाह दी कि आप महात्मा गांधी के पास जाइये। मोती लाल नेहरू ने जाकर महात्मा गांधी को अपनी समस्या बताई, महात्मा गांधी ने कहा, आप अपनी बेटी को मेरे पास भेजिए, वह 24 घंटे में आपकी बात मान लेगी। जब वह महात्मा गांधी जी से मिली तब उन्होंने कहा, बहन, आप मुस्लिम के साथ शादी करने के लिए मुस्लिम धर्म स्वीकार करेंगी। इसमें आपकी सुरक्षा को खतरा है। मुस्लिम धर्म में एक मुसलमान चार शादियाँ कर सकता है इसलिए हो सकता है कि आगे चलकर आपको तीन सौतनें हो जायें। कोई छोटी-सी बात होने पर आपका होवनहार पति अगर तीन बार तलाक बोलेंगा तो आप रास्ते पर आ जायेंगी। इसलिए मैं और आपके पिताजी चाहते कि अगर आपका सच्चा प्रेम है तो अपने होवनहार पति को कहिये कि वह हिन्दू बन जायें। फिर सात साल तक आपका तलाक भी नहीं होगा और एक भी सौतन नहीं होगी। उस

बहन को यह बात पसंद आ गई, उसने कहा, मैं उनको मना लूँगी। परन्तु उस व्यक्ति ने मना कर दिया कि मैं हिन्दू नहीं बन सकता। तब उस बहन की आँखें खुल गईं। उसने महात्मा गांधी से कहा कि मैं उनके साथ शादी नहीं करूँगी, मेरे पिताजी जहाँ कहेंगे, वहीं शादी करूँगी। तब महात्मा गांधी ने उनसे लिखवा लिया। तब से मोतीलाल नेहरू और उनका पूरा परिवार महात्मा गांधी के प्रति पूज्य भाव रखने लगे।

जब तक धर्मों के अंदर एक जैसे रस्म-रिवाज नहीं होंगे तब तक एक धर्म की बात प्रैक्टिकल नहीं हो सकती। परंतु आज विश्व धर्म सम्मेलन में रस्म-रिवाज की एकता के बारे में कोई प्रयत्न नहीं किये जाते। हिन्दू व्यक्ति वर्से के रूप में अपनी संपत्ति अपने बच्चों या किसी को भी जितना देना चाहे, दे सकता है परंतु मुसलमान धर्म में तो वर्से के बारे में नियम बने हुए हैं कि बच्चे को संपत्ति में दो हिस्सा और बेटी को एक हिस्सा मिलेगा।

उत्तर प्रदेश में एक मुसलमान संस्था ने कहा है कि बहनें पुरुषों के साथ नौकरी नहीं कर सकती तो दूसरी ने कहा है कि बुरका पहनकर नौकरी कर सकती हैं। फ्रांस में भी नियम बनाया गया है कि बहनें बुरका नहीं पहनेंगी। ईरान में नियम है कि कोई भी मुस्लिम स्त्री बुरका पहने बिना

और साथ में किसी पुरुष को लिये बिना रास्ते पर अकेली नहीं जा सकती। भारत में धर्मों के आधार पर व्यक्तियों पर अलग-अलग कानून लागू होते हैं परन्तु आस्ट्रेलिया में सभी लोगों पर एक ही कानून लागू होता है।

इस प्रकार से सोचा जाये तो धर्म के नाम पर एकता और समाज में सुख-शान्ति तब हो सकेगी जब एक जैसे रस्म-रिवाज, नीति-नियम होंगे।

सन् 1971 में जब डेलीगेटस का पहला ग्रुप विदेश में गया तो अव्यक्त बापदादा से मैंने पूछा कि विदेश से समाचार आया कि वहाँ पर हमें पवित्रता की बात नहीं करनी है। तब शिवबाबा ने दो मिनट शान्ति के बाद उत्तर दिया कि नहीं बच्चे, विदेश में भी मेरे कई ऐसे बच्चे हैं जो पवित्रता को मानते हैं और यह पवित्रता का नियम सबके लिए एक समान होगा, इसमें हम कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। आज भी 130 देशों के भाई-बहनें यज्ञ की सब प्रकार की मर्यादाओं का पालन करते हैं और सब प्रकार के प्रलोभनों से मुक्त रहते हैं। इसलिए शिवबाबा एक समान दैवी संस्कृति और सभ्यता की स्थापना कराकर विभिन्न देश, भाषा और धर्म के बीच के भेद को मिटा रहे हैं। दुनिया एक धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के सम्मेलन करती रहती है और शिवबाबा चुपचाप अपना कारोबार करते रहते हैं। ❖



‘पत्र’ संपादक के नाम

ज्ञानामृत का अप्रैल, 2010 अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यह वास्तव में ज्ञान अमृत का सागर है। ‘डिप्रेशन: जानकारी और समाधान’ अत्यंत ज्ञानवर्धक, सारगर्भित लेख है। आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि इसको बार-बार पढ़ने और गंभीरता से चिन्तन व मनन करने से निश्चित रूप से मनुष्य पूरी तरह डिप्रेशन से छुटकारा पा सकता है।

— यज्ञदत्त शर्मा, अजमेर

अप्रैल, 2010 अंक में ‘मन की धुलाई’ से ‘पहाड़ जैसा दुख भूल गई’ तक एक ही दिन में पढ़ गया। ‘भगाइये क्रोध रूपी भूत को’, ‘स्वर्ग का द्वार है नारी’, ‘बाबा प्यार तुम्हारा’ और ‘प्रश्न हमारे, उत्तर आपके’ भी अति पसन्द आये। इनकी बड़ाई किन शब्दों में करूँ? अभी भी ‘मन की धुलाई’ शीर्षक का सबक मानकर पढ़ता आ रहा हूँ आन्तरिक जगत को बेदाग बनाने के लिए।

— बी.के.धर्मनाथ प्रसाद, जलालपुरी

अप्रैल, 2010 अंक में छपा लेख ‘भगाइये क्रोध रूपी भूत को’ पढ़कर जीने के लिए एक नई दिशा मिली। क्रोध से पाया तो कुछ नहीं जाता, खोना ही खोना पड़ता है। ‘डिप्रेशन: जानकारी और समाधान’ प्रश्नोत्तरी के माध्यम से जो-जो सुझाव दिये गये, उनका मनन और चिन्तन करना चाहिए। लेख द्वारा डिप्रेशन की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान हुआ। निमित्त बहन-भाई को धन्यवाद।

— बी.के.सुनन्दा चौधरी, अमरावती

विश्व पटल पर, मानव को मानवीय मूल्यों से जीने की कला, संस्कार और ईश्वरीय सौगात की ओर ले जाने की भागीरथी कला का रसपान आपके ‘ज्ञानामृत’ रूपी कलश से करने का अमिट सौभाग्य प्राप्त हुआ। ‘संजय की कलम से’ जब शुरू का पन्ना पढ़ा जाता है तो शरीर ही नहीं, अंतरात्मा को झिंझोरकर रख देता है कि इस मारकाट व कलियुगी जीवन में इन्सानी जीवन के मूल्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक द्रोणाचार्य दैविक रूप से कहीं न कहीं अर्जुनों की सेना तैयार कर रहा है। अप्रैल, 2010 का अंक पढ़कर मैं स्वयं को रोक नहीं सका और अंततः पत्र लिखने को मजबूर हो गया।

— भरत चांदिल, मुरैना

विवेक को नष्ट करता है क्रोध

• ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

संसार में करोड़पति हैं और रोड़पति भी परंतु उन दोनों में से उन्मादी हैं क्रोधपति। करोड़पति अहंकारी हो सकते हैं जबकि क्रोधपति परेशानियों का शिकार रहते हैं। यह सोचना तो करोड़पतियों का ही काम है कि करोड़ों की संपत्ति के वो मालिक हैं या यह संपत्ति उनकी मालिक। इसी तरह क्रोधपतियों को यह स्वयं विचार करना है कि क्रोध उनका पति है या वे क्रोध के? कुछ भी हो, क्रोध है बुरा, जिसके घर में इसका वास होता है, उसके खजाने खाली हो जाते हैं। खजाने कौन-से? सुख, शान्ति, प्रेम, खुशी व संतुष्टता के। ये सर्वश्रेष्ठ खजाने हैं और यह क्रोध एक भयंकर भूत है जिसकी नज़र इन्ही खजानों पर रहती है। अब सोच लें, आपको ये खजाने प्रिय हैं या आपका प्यार इस भूत से है?

निर्णय शक्ति भ्रमित

क्रोधी पापा के घर में प्रवेश करते ही बच्चे ऐसे ही दुबक जाते हैं जैसे बिल्ली को देखकर चूहे। यदि किसी के घर का बड़ा व्यक्ति क्रोध की अग्नि में जलता है तो वहाँ की खुशहाली जलकर नष्ट हो जाती है। बच्चों की बुद्धि का विकास रुक जाता है और अनेकों का जीवन उदासी व निराशा के गहन अंधेरे में डूब जाता

है। क्रोध का पहला बुरा परिणाम भुगतना पड़ता है स्वयं क्रोधी को। हमें ज्ञात रहे कि क्रोध मनुष्य के विवेक को नष्ट कर देता है। क्रोध बुद्धि का परमशत्रु है, क्रोध मनुष्यों से पाप कराता है और उन्हें जेल के शिकंजों में भी बंद करवा देता है। क्रोध आने से मनुष्य की निर्णय शक्ति भ्रमित हो जाती है और वह उचित निर्णय नहीं कर पाता। यदि निर्णय ही उचित न हो तो जीवन अवश्य ही समस्याओं के घेरे में आ जाता है।

मस्तिष्क में कमजोरी

सुना होगा आपने कि क्रोध का प्रारंभ मूढ़ता से होता है और अंत पश्चाताप से। जब क्रोध प्रारंभ होता है तो बुद्धि को मूढ़ कर देता है। जब मनुष्य क्रोध की ज्वाला में जलता है तो अपशब्दों का प्रयोग करता है और जब क्रोध शान्त होता है तो पश्चाताप की अग्नि में जलता है। यह महाशत्रु क्रोध – आदि-मध्य-अन्त मनुष्य को दुख देता है। क्रोध करना पाप भी है। इससे दूसरे दुखी होते हैं, दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचती है। यूँ भी कह सकते हैं कि क्रोध पाप का मूल है और पाप का फल सदैव ही बुरा होता है। क्रोध से बुद्धि का नाश होता है इसलिए जिन बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रवीण होना है वो क्रोध का त्याग

करें। माँ-बाप का भी कर्तव्य है कि वे घर में ऐसा वातावरण न बनायें जिससे बच्चों का क्रोध व चिड़चिड़ापन बढ़े, नहीं तो इसका प्रभाव उनके भविष्य पर अवश्य होगा। यह भी सब जानते होंगे कि क्रोध से तनाव और तनाव से एसिडिटी व अल्सर होता है। क्रोध से हाई ब्लड प्रेशर होता है। क्रोध का प्रभाव मनुष्य की पाचन शक्ति को क्षीण कर देता है और मस्तिष्क को निर्बल बनाता है। इसलिए भी मनुष्य को इस ज़हर को त्याग देना चाहिए।

अतः हे क्रोध के पतियो, अपने क्रोध को त्यागने की इच्छा पैदा करो। आपके बच्चे और पत्नी प्यासी नज़रों से आपके घर में आने की राह देखते हैं। स्वयं सोचो, जब आप क्रोध के गुबार को मन में समाये घर में जाते हो तो उनकी भावनाओं पर कितना कुठाराघात होता होगा। उनकी जगह आप होते तो...?

कई अधिकारी भी कहते हैं, क्रोध करना ही पड़ता है। उसके बिना लोग काम नहीं करते। ठीक है यह बात। कार्यकर्ता भी ऐसे ही हैं लेकिन क्या अग्नि से सब काम हो सकते हैं? क्या अग्नि प्यास भी बुझा सकती है? आप अपने अंदर स्नेह व शुभ भावनाओं की शक्ति भरें। यह शक्ति चमत्कारिक कार्य करेगी। प्रेम का शस्त्र, क्रोध के शस्त्र से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

(शेष.. पृष्ठ 19 पर)

बाबा ने जीना सीखा दिया

• ब्रह्माकुमारी रजनी, फतेपुर बागबंकी

मैं अपने जीवन से बहुत दुखी थी, कारण कि मेरे लौकिक माता-पिता ने जिसको जीवन साथी बनाकर मुझे सौपा, वो पहले से ही नशा करते थे और कमाते कुछ भी नहीं थे। कलियुगी मनुष्य अपनी संतानों को लायक नहीं बना सकते और दूसरी गलती फिर यह कर लेते हैं कि उनकी गलती छिपाकर, दूसरे का हाथ उसको पकड़ा देते हैं। नींव पड़े बिना ही महल देखने की कल्पना करते हैं। ससुराल पहुँच कर सत्य जानकर सोच में पड़ गई कि अब तो जीवन जीना मुश्किल और मरना आसान है परंतु 'लौकिक माँ-बाप दुखी होंगे' – यह सोचकर जीवन को चलाने लगी। मनुष्य को कोई और हुनर आये या न आये लेकिन विकारी संतानें पैदा करने में सभी हुनरवान हैं। मेरे जीवन में भी दो बालक और दो बालिकायें आ गये। उन्हें देखकर खुशी भी हुई और गम भी कि इन मेहमानों का सम्मान कैसे करें, हाथ तो खाली हैं। पति को किसी धन्धे में सफलता नहीं मिली। मैं अपने ही मासूम बच्चों को देख-देखकर अपने ही भाग्य को कोसती थी। समाधान कुछ पता नहीं था। घुट-घुट कर जी रही थी। इसी बीच बीमारी ने भी बहुत परेशान किया। मैं सोचती थी, कहाँ जाऊँ और क्या करूँ।

एक नवरात्रि पर जाप कर रही थी तो देखा, दीपक की लौ ऊपर उठ रही है और आगे बढ़ रही है, मैं उसके पीछे-पीछे चल रही हूँ। ज्योति एक गेट के पास जाकर रुक गई जिस पर लगे बोर्ड पर लिखा था, 'प्रजापिता ब्रह्मावुःमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय'। यह दृश्य देख मन में खुशी की लहर दौड़ने लगी। दृश्य में देखे स्थल पर मेरा मन बारंबार जाने लगा। एक दिन हिम्मत कर एक माता के साथ सत्संग करने चल पड़ी। माता जी ठीक उसी जगह ले गई जहाँ दीपक ले गया था। अन्दर गई तो मुझे परम शान्ति का अहसास हुआ और अनुभव हो रहा था कि यहाँ पहले भी कभी आये हैं। कब आये हैं, यह याद नहीं आ रहा था परन्तु आये हैं ज़रूर।

माता जी ने निमित्त बहन से परिचय

कराया, उन्होंने सांत्वना दी और सात दिन का कोर्स करने के लिए आमंत्रित किया। कोर्स शुरू हुआ और बुद्धि में ज्ञान का संचार होने लगा। कर्मों की गति का, चौरासी के चक्र का, आत्मा के असली पिता परमात्मा का और ब्रह्मा बाबा का परिचय पाते ही दुखी मन खुशी में किलकारियाँ भरने लगा। नित्य प्रति ज्ञान अमृत पान करने लगी। ज्ञान के साथ बाबा ने पवित्र जीवन भी दिया। बाबा अपना बनाते ही कृपा बरसाने लगते हैं। पति ने गांजा पीना छोड़ दिया। लाख-लाख बाबा को शुक्रिया! मैं तो किसी काम की नहीं थी, बाबा ने जीवन जीना सिखा दिया। मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि सभी आत्मिक भाई-बहनें निकट के सेवाकेन्द्र पर जायें और ज्ञान-धन से शेष जीवन को सफल बनायें। समय, श्वास, संकल्प सफल करने का, भाग्य बनाने का, अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का समय यही है। अभी नहीं तो चारों युगों में कभी नहीं। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी

कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा

(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)

दिनांक : 11 से 14 अगस्त, 2010

सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन

(Trained in U.K., Australia and Germany)

पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 फैक्स : 238570

ई-मेल : ghrcabu@gmail.com वेबसाइट : www.ghrc-abu.com

गतांक से आगे..

एकान्त

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

राजयोगी के लिए

एकान्त है वरदान

आज मनुष्य अकेलापन दूर करने के नाम पर कुसंग के शिकार हो रहे हैं। अकेलेपन में भौतिकता का या शारीरिक भाव का आभास है जबकि एकान्त में जाना आत्मिक भाव से होता है। एक राजयोगी भीड़ के मध्य भी एकान्त की स्वतंत्रता का निर्वाह पूर्ण मधुरता के साथ कर सकता है परन्तु एक आम मनुष्य, भीड़ के मध्य में एकाकीपन (असहाय, अकेलापन) महसूस करता है क्योंकि वह अपने वास्तविक आत्म स्वरूप से अनभिज्ञ है। यह मनुष्य के दुर्भाग्य की समग्रता ही है जो वर्तमान में ईश्वरीय ज्ञान के उपलब्ध होते हुए भी एक आम व्यक्ति एकाकीपन में है। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर एक राजयोगी तो एकान्त को वरदान के रूप में लेता है जबकि एक अनभिज्ञ एकाकी मनुष्य इस स्थिति से बचना चाहता है चाहे इसके लिए उसे अखबार, टेलिफोन या टी.वी. खोलकर अनचाही बातों को भी अन्दर उड़ेलना क्यों न पड़े।

कहने को तो मनुष्य अपने नाते-रिश्तेदारों, हितैषी-शुभचिन्तकों व सहकर्मियों पर नाज़ करता है और

समझता है कि ये आड़े वक्त में काम आयेंगे परन्तु उसे पता नहीं कि वह बिल्कुल अकेला है और जो आड़े वक्त काम आ सकता है, उसका उसे पता ही नहीं। आज मनुष्य अकेला है क्योंकि वह सेतुओं का निर्माण न करके दीवारें खड़ी करने में लगा है। धर्मों की दीवार, मजहबों की दीवार, ऊँच-नीच की दीवार को गिराना आवश्यक है। इन बातों ने वह काम कर रखा है जो बड़े-बड़े आतंकवादी भी नहीं कर सकते। आतंकवादी कुछ लोगों को आतंक का शिकार बनाते हैं परन्तु इन दीवारों ने तो सारे मनुष्य-संप्रदाय को ही धर्म-मजहब की कट्टरता के आतंक का शिकार बना रखा है।

मानसिक प्राणी भी है मनुष्य

एक सवाल यह उठ सकता है कि यदि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो क्या उसका एकान्तवासी होना सही है? मनुष्य सामाजिक प्राणी होने से पहले एक मानसिक प्राणी है। वह मन से कहाँ निवास करता है, कहाँ-कहाँ रमण करता है, कैसे विचार, वृत्ति व दृष्टिकोण रखता है, उसी पर निर्भर करता है कि वह एक सामाजिक प्राणी है या नहीं। जॉन मिल्टन के अनुसार,

‘एकान्त कभी-कभी सर्वश्रेष्ठ समाज बन जाता है (Solitude sometimes is best society)।’ कभी-कभी अर्थात् यदा-कदा, जबकि होना चाहिये सदा-सर्वत्र। चरित्र का निर्माण समाज में रह कर हो सकता है, एकान्त में नहीं। आत्मा के गुण व शक्तियों का विकास समाज में रहते हुए ही हो सकता है अर्थात् आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य समाज में रहकर चरित्र का निर्माण करे और श्रेष्ठ चरित्र को लेकर एकान्त में एक आगंतुक की तरह गमन करे। एकान्त का पूरा लाभ एक चरित्रवान मनुष्य ही ले सकता है। यदि कुसंस्कारी मनुष्य एकान्त में जाता है तो वह मानसिक तनाव ही पैदा करेगा और फिर डिप्रेशन में जाकर दवाइयाँ ही खायेगा।

प्रश्न है कि एक देह-अभिमानि मनुष्य यदि आध्यात्मिक साधना के द्वारा अपने जीवन को सफल करना चाहता है तो शुरूआत कैसे करे? वह साधना के लिए आवश्यक एकान्त में कैसे जाए? किसी भी साधना के दो पक्ष होते हैं – सैद्धांतिक व प्रायोगिक। यदि साधक ने सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो कुछ समय तक उसे ज्ञान-चिन्तन व ईश्वरीय स्मृति यानि योग में जाने का अभ्यास अन्य साधकों के साथ समूह में करना चाहिए। मन को किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव की तस्वीर में न फँसाना ही सच्चा एकान्त है।

एकान्त की व्याख्या करते हुए ब्रह्मा के मुख से शिव परमात्मा के महावाक्य हैं कि “हर रोज़ नवीनता का अनुभव करो। नया अनुभव तब होगा जब एकान्तवासी होंगे। एकान्तवासी अर्थात् सदा स्थूल एकान्त के साथ-साथ एक के अंत में सदा रहना। सिर्फ बाहर का एकान्त नहीं लेकिन एक के अन्त में खो जाना, यह एकान्त है। एक बाप के अन्त में खो जाओ। जैसे सागर के तले में चले जाते हैं तो कितना खज़ाना मिलता है। अंत में चले जाओ और बाप से जो प्राप्तियाँ हैं उनमें खो जाओ, सिर्फ ऊपर-ऊपर की लहरों में नहीं लहराओ। साइलेन्स के स्थान और परिस्थिति में एकाग्र होना, यह तो साधारण बात है लेकिन चारों प्रकार की हलचल के बीच, एक के अन्त में खो जाओ अर्थात् एकान्तवासी हो जाओ।” एकान्तवासी कैसा होता है उसको परिभाषित करते हुए शिव बाबा कहते हैं, “एक पावरफुल स्थिति में अपने मन को, बुद्धि को स्थित करना ही एकान्तवासी बनना है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा, संपूर्णता की समीपता की निशानी – सेवा में रहते, समाचार सुनते-सुनते भी एकान्तवासी बन जाते थे। एक घण्टे के समाचार का भी पाँच मिनट में सार समझ बच्चों को भी खुश किया और अपने अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का भी अनुभव कराया।”

भाग्यशाली मनुष्य अंतिम समय में शिव की गहन स्मृति में रहते हैं, जिसका अभ्यास वे एकान्त की विधि द्वारा लंबे समय से करते रहे हैं। यही श्रेष्ठ स्मृति उन्हें शिव के संग प्रस्थान करने का अनुभव कराती है। यही मुक्ति, जीवन्मुक्ति की युक्ति है।

(समाप्त)

विवेक को नष्ट..पृष्ठ 16 का शेष

कामनाओं को कम करें

क्यों होता है मनुष्य क्रोध का शिकार? निर्बल मन में क्रोध का प्रवेश होता है। जो मनुष्य ज्यादा भावुक है, उस पर क्रोध का वार होता है। जहाँ अहंकार है, वहीं क्रोध का जन्म होता है। क्रोध का मुख्य कारण है मनुष्य की कामनाओं का पूर्ण न होना। कइयों ने क्रोध को अपना स्वभाव ही बना लिया है। यह एक रोग है जो आपको निर्बल करता चलेगा। याद रहे, शक्तिशाली व्यक्ति वही है जो स्वयं पर नियंत्रण कर सके। क्रोध मुक्ति के लिए आप अपनी अनावश्यक कामनाओं को समाप्त करें। आपको ज्ञात हो कि प्रत्येक मनुष्य का सामर्थ्य अपना-अपना है। हरेक मनुष्य हमारी इच्छाओं के अनुरूप कार्य नहीं कर सकता। हमें दूसरों को भी जानने व पहचानने की कोशिश करनी चाहिए और साथ-साथ उनकी परिस्थितियों पर भी ध्यान रखना चाहिए। इस अग्नि से बचने के लिए आप कभी भी यह न कहें कि काम ऐसा ‘क्यों’ नहीं किया, मुझे उसने ऐसा ‘क्यों’ कहा, मेरी आज्ञा ‘क्यों’ नहीं मानी। जीवन में विभिन्न क्षेत्र में उठने वाला यह ‘क्यों’, क्रोध को जन्म देता है। जैसा मैं चाहूँ, वैसा ही सब करें, इस विचार को जरा हल्का कर दें। अपने से पूछें कि क्या मैं स्वयं सदा ही दूसरों की कामनाओं के अनुरूप काम कर सकता हूँ। उत्तर मिलेगा, नहीं। इस समस्त विश्व में कोई भी मनुष्य सदा ही दूसरों की कामनाओं पर खरा नहीं उतर सकता। इस सत्य को जानकर कामनाओं को कम करें तो क्रोध कम हो जायेगा।

धैर्य एक महान गुण है। धैर्य ही क्रोध की औषधि है। ज़रा ठहरें व मन को तुरन्त प्रतिक्रिया करने से रोकें। कुछ बोलना ही है तो एक मिनट ठहर जायें। मुझे क्रोध नहीं करना है क्योंकि क्रोध व्यक्तित्व को मलीन कर देता है, क्रोध विचारों को दूषित कर देता है – यह प्रतिज्ञा कर लें। एक मास तक प्रतिदिन सवेरे उठकर अपनी प्रतिज्ञा को दोहरायें, कुछ अच्छे विचार मन में लायें, तो क्रोध अवश्य ही खत्म हो जायेगा।

तो आओ, हम सब अपने-अपने घरों में प्रेम, खुशी व शान्ति की सरिता बहायें। हम प्रारंभ करें क्रोध को त्यागने का तो हमें देखकर अन्य भी वैसा ही करेंगे। चाहे जितना भी ज्यादा काम हो, सहज भाव से क्रोध रहित होकर करें। ❖

हंस-समूह का शान्तिपूर्ण साम्राज्य

• ब्रह्माकुमार राजेश, जनकपुरी, नई दिल्ली

अरावली पर्वत शृंखलाओं के सुरम्य सान्निध्य और आबू पर्वत की गोद में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के 'शान्तिवन परिसर' में 4 से 8 सितंबर, 2009 तक 'मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता द्वारा स्व-सशक्तिकरण' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों का महासम्मेलन आयोजित किया गया। देश और विदेश से लगभग 5,000 शिक्षक भाई-बहनों ने इस समागम में उपस्थित होकर, ब्रह्माकुमारीज के नैतिकता एवं शाश्वत मूल्यों के प्रति निष्ठावान व्यक्तियों को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सम्मानित करने के महान लक्ष्य को सार्थक कर दिया।

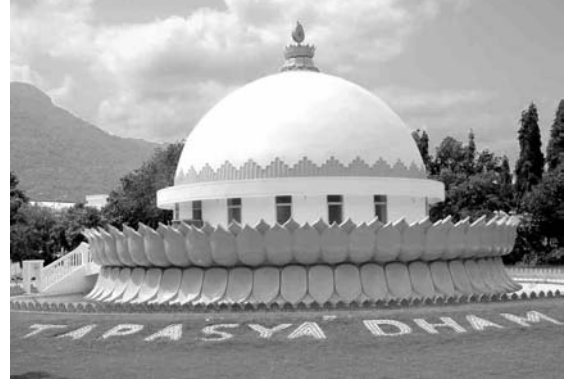
चार सितंबर, 2009, प्रातः 4 बजे आबू रोड स्टेशन पर रेलगाड़ी से ज्योंहि उतरे, लगा, जैसे स्टेशन पर श्वेत हंसों का सैलाब उमड़ पड़ा हो। सभी भाई-बहनों को शान्तिवन परिसर ले जाने के लिए बसों की विशेष व्यवस्था थी। स्वागत कक्ष में पंजीकरण, सरल व सुव्यवस्थित कक्ष आबंटन की प्रक्रिया ने सबका मन मोह लिया। सायं छह बजे स्वागत सत्र में प्रत्येक आत्मा को भेंट की गई ईश्वरीय सौगात – स्वागत व अभिनन्दन की अपनत्वभरी परिभाषाओं की नई इबारतें लिखी गई। पच्चीस हजार लोगों के बैठने की क्षमता रखने वाले डायमण्ड हॉल में इस समारोह की भव्यता देखते ही बनती थी।

“मैं कौन हूँ? इसका जिसे ज्ञान हो गया;

वह व्यक्तित्व स्वतः ही महान हो गया।

योग और ज्ञान का प्रवाह जहाँ गतिमान हो गया;
वहाँ जन-जन के हर पहलू का कल्याण हो गया।”

एक से एक प्रखर, प्रभावी, प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी वक्ताओं की वाणी की मिठास, ज्ञान से ओत-प्रोत अमृत



की बरसात, सहज राजयोग द्वारा श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ अर्जित करने की सरल विधियों ने वायुमण्डल को आभायुक्त बना श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा ब्रह्मलोक की यात्रा द्वारा परमानंद का अहसास करवा दिया। सम्मेलन में अविरल प्रवाहित ज्ञान की धारा से अनुभव हुआ कि

“हे ईश्वर! आप आनंदमयी अनुभूतियों के आधार हैं;

अध्यात्म के अहसास और सदज्ञान के आगार हैं।

द्वंद्वों के भंवर में करुणा, प्रेम व शान्ति के भण्डार हैं;

मिले हैं हम यहाँ परमपिता शिव से, जो सबकी पतवार हैं।”

ज्ञानामृत मासिक पत्रिका के संपादक ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई के सटीक शब्दों रूपी ज्ञान से ज्ञात हुआ कि बिना कारण के परिणाम नहीं हो सकता। मानवीय मूल्यों के गिरते स्तर का कारण हैं पांच विकार। इन विकारों का कारण है देहाभिमान और देह अहंकार का कारण है अज्ञान। अतः जब यह ज्ञान हो जाये कि ‘मैं आत्मा हूँ, जो शरीर से भिन्न है’ तो नैतिक और मानवीय मूल्यों के सही अर्थ समझ में आयेंगे और यह संभव है सिर्फ आध्यात्मिक क्रांति से ताकि भारत पुनः विश्व का सिरमौर बने।

आस्था चैनल आदि के द्वारा सेवारत मीडिया प्रमुख,

इंजीनियर ब्र.कु. करुणा भाई ने सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का जो परिचय दिया, उसने हमारे ज्ञान-चक्षुओं को दस्तक दी; आत्मा के सात गुणों और आठ शक्तियों ने बुद्धि के कपाटों को खटखटाया; गुलज़ार दादी, रतनमोहिनी दादी और जानकी दादी के ज्ञान से लबालब शब्दों की गूँज अब भी रोम-रोम में महसूस हो रही है।

ज्ञान सरोवर से आई ब्र.कु. गीता बहन ने बताया कि पाँच कर्मेन्द्रियों के समूह को शरीर तथा मन, बुद्धि व संस्कार के त्रिकोण को आत्मा कहते हैं। मन अर्थात् आत्मा की विचार, संकल्प और मनन शक्ति है। इन विचारों पर विवेकपूर्ण ढंग से निर्णय करने की शक्ति ही बुद्धि है और बुद्धि द्वारा लिये गये निर्णय पर किये गये कर्मों की पुनरावृत्ति ही संस्कार बन जाते हैं।

दादी रतनमोहिनी जी बारह वर्ष की अल्प आयु से इस संस्था से जुड़ी हुई हैं, उनसे एक सुबह ईश्वरीय महावाक्य सुनने का परम सौभाग्य मिला। दादी जी ने बताया, हम सभी मैं और मेरा की जो माला हर पल जपते रहते हैं, उसके स्थान पर मैं आत्मा और मेरा अर्थात् मेरा परमपिता परमात्मा शिव बाबा का महीन किंतु महत्त्वपूर्ण भेद सदा ध्यान रखें।

परम पूज्यनीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के सान्निध्य में अमृतवेले के राजयोग में बरसते अमृत के रसपान का आनन्द अवर्णनीय है; उसे शब्दों में बाँधने की ताकत मेरी कलम में नहीं है क्योंकि उन आत्मविभोर कर देने वाले लम्हों में मिले परमानंद को मात्र महसूस किया जा सकता है, अभिव्यक्त नहीं। अमृत से भी अधिक मीठी और स्नेह भरी दृष्टि जो दादी ने हमारी ओर की तो यूँ लगा जैसे वक्त थम गया हो, साँसों के गतिमान होने का अहसास आनंद के सागर में कहीं खो गया हो! गुह्य ज्ञान और शिव बाबा का स्नेह चारों ओर से हमारी झोली में आकर आत्मा को पावन बना रहा था।

शान्तिवन परिसर में हर समय चारों ओर श्वेत हंसों रूपी जनसमूह के बावजूद हर तरफ शान्ति का संपूर्ण साम्राज्य व्याप्त था। तपस्या धाम हो, बाबा का कमरा हो या हो काफ़्रेस हाल, चारों दिशाओं में राजयोग में लीन राजयोगियों की, ब्रह्मलोक के स्वामी शिव से प्रतिपल होती मुलाकात के नज़ारे थे। हर क्षण प्रकाश स्तंभ को नमन करते, दादी प्रकाशमणि के प्रति गहन आस्थायुक्त चेहरों के समर्पित भाव, वातावरण में आस्था की परिभाषा लिखते नज़र आ रहे थे।

डायमण्ड हॉल की भव्यता देखते ही बन रही थी। मंच संचालन करती बहनों का मैं व्यक्तिगत रूप से कायल हूँ। उपलब्ध कराये गये उच्च कोटि के सात्विक ब्रह्मा भोजन की श्रेष्ठतम व्यवस्था से ही शायद सुव्यवस्था की पहचान और परिचय शुरू होता होगा। आबू दर्शन की विशेष व्यवस्था कर देने से भाई-बहनों ने भ्रमण का आनंद भी ले लिया।

वहाँ रहते हुए ऐसा लग रहा था जैसे हम अपने दादा या नाना के घर आये हुए हैं। प्रस्थान के समय यात्रा भोजन, आशीर्वाद रूपी टोली तथा संस्थान की बसों द्वारा हम सभी भाई-बहनों को स्टेशन पर पहुँचाने से हमारी वापसी यात्रा सुखद बन गई। मैं इस पूज्यनीय स्थल के सभी विभागों विशेष रूप से ट्रांसपोर्ट तथा किचन विभाग, समस्त समर्पित भाई-बहनों तथा संस्थान के प्रबंधकों को कोटि-कोटि नमन करते हुए उनके योगदान के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

‘सपने वे नहीं होते, जो हमें सोते में आते हैं,

जो हमें सोने नहीं देते, सपने वे होते हैं।’

हम वापस आये हैं उन सपनों को अपनी पलकों में संजोए जो हमें हर वक्त उस सर्वशक्तिवान, सर्वगुणसागर और सर्वज्ञ की याद का अहसास दिलाते रहेंगे। ❖

बढ़ रही है विश्व में विनाश की ज्वाला

वर्तमान समय सृष्टि का जो विचित्र रूप दिखाई पड़ रहा है, वह आदिकाल में नहीं था। आज से पाँच हजार वर्ष पहले संपूर्ण सृष्टि सतोप्रधान थी। इस पर रहने वाले मनुष्य देवी-देवता कहलाते थे। प्राणी, सुखी जीवन व्यतीत करते थे। हर एक के चेहरे पर सच्ची खुशी और शान्ति झलकती थी। संपूर्ण संसार सुखमय था। ऐसी दुनिया की रचना स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा और ब्रह्मावत्सों के साथ मिलकर की थी जिसे स्वर्ग, पैराडाइज, जन्नत, वैवुण्ठ, बहिस्त, विष्णुपुरी, दैवी दुनिया आदि अनेक नामों से जाना जाता है। परंतु इसे समय की विडंबना कहें, प्रकृति का नियम कहें या मनुष्य की प्रकृति से छेड़छाड़ जो आज धरती के बदहाल को देखकर सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा तथा उनके साकार रथ प्रजापिता ब्रह्मा बाबा भी द्रवीभूत हैं कि हमने इसे कितना सुन्दर रूप प्रदान किया और आज यह कितनी भयानक हो गई है!

मानवता पर भारी

पड़ रही है तरक्की

वर्तमान समय, देह-अभिमान के कारण मानव, विज्ञान के बलबूते

भले ही भगवान बनने की राह पर चल पड़ा है पर उसकी यह तरक्की पूरी मानवता पर भारी पड़ रही है। मानव की ज़रा-सी चूक पूरी सृष्टि को कई बार तबाह कर सकती है। विकास नामक इंजन से उसने विनाश को न्यौता दे दिया है। इस इंजन से निकली कालिख ने सृष्टि रूपी घर का क्या हाल कर दिया है, वह साफ नज़र आ रहा है। बिगड़ते पर्यावरण, पिघलते ग्लेशियर, सिकुड़ती धरती, सुरसा के मुँह-सी बढ़ती आबादी और बढ़ती गर्मी ने पूरी दुनिया में हड़कंप मचा दी है। वैश्विक समस्यायें गुप्त रीति से इतनी विकराल होती चली जा रही हैं कि मनुष्य चाह कर भी इनका समाधान नहीं कर पा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब धरती से साँसें उखड़ने लगेंगी, सिर्फ मानव समाज की ही नहीं बल्कि सारे संसार के सर्व जीवन-जंतुओं की भारी तबाही होगी।

बहुत सारी महान आत्माओं ने, धर्मपिताओं ने, ज्योतिषियों ने तथा वैज्ञानिकों ने सृष्टि को वर्तमान दुर्दशा से बचाने के लिए कई बार प्रयास किये, मनुष्य को चेतावनी भी दी लेकिन उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया और मानव के अहंकार ने

• ब्रह्माकुमार मुकेश, वाराणसी

आज पूरी सृष्टि को बारूद के ढेर पर लाकर रख दिया। पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ जीव माने जाने वाले मनुष्य ने, पिछले कुछ समय में, अपने अवांछित कार्यों द्वारा सृष्टि की व्यवस्था को ही ढहा दिया है जिससे उसे आने वाले समय में प्रकृति के महाकोप का सामना करना पड़ सकता है।

विध्वंसकारी है बढ़ती हुई गर्मी

हाल ही में 'ग्लोबल वार्मिंग पालिसी फाउंडेशन' ने, कोपनहेगन में, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन और धरती को बचाने के लिए एक सम्मेलन किया जिसमें समस्या पर विचार कम हुआ और राजनैतिक दखलंदाजी ज़्यादा हुई और पर्यावरण परिवर्तन के लिए सभी ने एक-दूसरे को दोषी ठहराया। फिर भी ब्रिटेन के मौसम विभाग ने वर्ष 2010 से 2019 के बीच 1998 के मुकाबले पूरे विश्व में गर्मी बढ़ने की बात कही है। इस बढ़ते हुए तापमान से धरती पर विध्वंसकारी परिवर्तन हो सकते हैं। धरती का ताप बढ़ने से दुनिया के सातों महाद्वीपों में उथल-पुथल मच जायेगी। उत्तरी अमेरिका में गर्म हवाएँ यानि लू चलेंगी, जंगलों में

और अधिक आग लगेगी, ग्लेशियर पूरे साल पिघलेंगे, तटीय क्षेत्रों में बाढ़ आयेगी। दक्षिणी यूरोप में भी लूएँ चलेंगी, पानी के बिना प्राणी तरस जायेंगे, खाद्यान्न के लाले पड़ जायेंगे, मध्य पूर्व यूरोप में बाढ़ के खतरे बढ़ जायेंगे, दक्षिणी और मध्य अमेरिका में बारिश कम होने से जंगलों द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड के आत्मसात् की संभावना घटेगी, अटलांटिक समुद्र तट पर बाढ़ आयेगी, घास के मैदान नष्ट हो जायेंगे, अफ्रीका प्यासा मर जायेगा, एशिया महाद्वीप में हिमालयी ग्लेशियर टूटेंगे, पिघलेंगे, इससे समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा, समुद्र तट के किनारे बसे बड़े-बड़े शहर जल समाधि ले लेंगे, जल प्रपात कम होंगे, खेती की हालत खराब होगी, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में पानी की बेहद कमी हो जायेगी, जीव-जंतुओं को प्राण-हानि होगी, तटीय क्षेत्रों में झंझावात बढ़ेंगे, ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघलेगी और ग्लेशियर खिसकेंगे, गल्फ स्ट्रीम ज्यादा उग्र होगी। ये तो विनाश के प्रारंभिक इशारे हैं, ग्लोबल वार्मिंग की भयानकता का संपूर्ण जीवन पर घोर विनाशकारी असर होगा।

जीवन की प्रथम आवश्यकता प्राणवायु इस स्तर तक प्रदूषित होती

जा रही है कि जापान जैसे देशों में शुद्ध वायु के सेवन के लिए दुकानें खुल गई हैं जहाँ संपन्न लोग जाकर शुद्ध वायु सेवन करते हैं। यही प्रक्रिया अन्य देशों में भी अपनाए जाने की संभावना है। ग्लोबल वार्मिंग के अतिरिक्त आज अन्य भी बहुत सारी विनाशकारी चुनौतियाँ मानव अस्तित्व के सामने हैं जैसे –

1.परमाणु हथियार:- एक आँकड़े के मुताबिक आज दुनिया में करीब 23 हजार परमाणु बम सहेजे जा चुके हैं जिनके प्रयोग से धरती को एक बार नहीं, कई बार नष्ट किया जा सकता है। इतिहास गवाह है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी पर अमेरिकी परमाणु परीक्षण इतना खतरनाक सिद्ध हुआ कि वहाँ मानवता की तबाही बड़े पैमाने पर हुई। आज भी इसका असर लूले-लंगड़े, बहरे बच्चों की उत्पत्ति के रूप में हो रहा है। अनेकों बार ऐसी परिस्थितियाँ बनीं जिसमें मनुष्यों ने गुस्से में आकर परमाणु बम का प्रयोग करना चाहा पर संयुक्त राष्ट्र संघ की पाबंदी के कारण यह स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाई। फिर भी, परमाणु बमों की क्षमता से लैस देशों के बीच तनाव तो चल ही रहा है, उसके कारण क्रोध में आकर अपने

विवेक को नष्ट कर महज एक लाल बटन दबाने से पूरा मानव अस्तित्व खत्म हो सकता है।

2.मानव निर्मित वायरस:- बीमारियों के इलाज में मानव शोध दर शोध में व्यस्त है। खतरा यही है कि यदि गलत हाथों द्वारा किसी घातक वायरस का निर्माण हो गया तो उसका प्रयोग वैश्विक महामारी के रूप में हो सकता है। सन् 1918 में वैश्विक महामारी बनकर उभरे 'स्पेनेस फ्लू वायरस' के कहर से दस करोड़ लोगों को मौत के मुँह में जाना पड़ा था।

3.मेल्ट डाउन:- तीव्र ऊर्जा का गोला सूर्य अपनी सतह से हमारी धरती की तरफ भारी मात्रा में प्लाज्मा को फेंक सकता है। इससे धरती पर बिजली से चलने वाले सारे उपकरण ध्वंस हो सकते हैं। सारी सूचना क्रांति खाक हो सकती है। वैज्ञानिकों ने इशारा दिया है कि यह खतरा कभी भी उत्पन्न हो सकता है। सूर्य से निकलकर आई भारी मात्रा में ऊर्जा ने पहले भी धरती को प्रभावित किया है।

4.स्टेम सेल:- मानव में 'स्टेम सेल' से तैयार अंगों का प्रत्यारोपण हो चुका है। स्टेम सेल मानव भ्रूण के अलावा गर्भ नाल और अस्थि-मज्जा में भी पाई जा सकती है। इस

कोशिका की यह विशेषता होती है कि यह विभाजित होकर किसी भी अंग में तबदील हो सकती है लेकिन अगर सही दिशा-निर्देश न मिले तो यह भयावह प्रजाति भी तैयार कर सकती है।

5. वृत्रिम बौद्धिकता :- Artificial Intelligence यानि मशीनों में सोचने-समझने की शक्ति। अब मनुष्य मशीनों को अपने जैसा बनाने पर तुला हुआ है। उनमें सोचने-समझने की शक्ति का विकास कर रहा है। मशीन में प्राण-प्रतिष्ठा करने की तैयारी कर रहा है। स्वयं के बारे में सोचने-समझने की ताकत आने पर ये मशीनी मानव बगावत का झंडा बुलंद कर सकते हैं। इस हालत में महायुद्ध की विभीषिका में मानव ही कमज़ोर पड़ेंगे। कई देशों की सेना में रोबोट सैनिक तैनाती पर विचार किया जा रहा है।

6. हैकर्स:- हैकर्स भी तबाही मचा सकते हैं। आज बुरे हैकर्स से कोई भी सुरक्षित नहीं है। यदि कोई हैकर्स बिना अपनी पहचान छोड़े किसी देश की सुरक्षा प्रणाली से छेड़छाड़ करता है तो उस देश को परमाणु हमला किये जाने का आभास हो सकता है और पूरी दुनिया में परमाणु युद्ध छिड़ सकता है। पेन्टागन,

डिफेन्स, थ्रेट, रोडक्शन एजेन्सी, नासा, विभिन्न अन्य देशों के परमाणु प्रतिष्ठान, बैंक, सुरक्षा एजेन्सियों इत्यादि की कंप्यूटर प्रणाली के एक बार हैकिंग से कई गंभीर परिणाम आ सकते हैं।

उपरोक्त विनाशकारी स्थिति को देखते हुए, मानव जीवन की सुरक्षा के लिए कई प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। नार्वे ने 'स्वेल बार्ड' द्वीप में एक अंतर्राष्ट्रीय बीज भण्डार पर काम शुरू कर दिया है जहाँ बर्फ के काफी अंदर ऐसा सुरक्षित स्थान बनाया जा रहा है जिसमें विश्व के सभी बीज संग्रहित किये जा सकें ताकि महाविनाश के समय इन बीजों की किस्म सुरक्षित रहे।

स्थिति की इस विकरालता से पूर्वभिज्ञ सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा शिव तथा उनके साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, ईश्वरीय योजना के अनुसार सृष्टि पर जीवन की सुरक्षा के लिए सन् 1936 से प्रयासरत हैं। बाबा कहते हैं, प्रकृतिजीत अर्थात् प्रकृति के मालिक का प्रकृति कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। बाबा ने तो यहाँ तक कहा है कि तूफान आएगा, तबाही मचाएगा परंतु जहाँ प्रकृतिजीत आत्मा होगी, उसे नुकसान पहुँचाए बिना निकल जाएगा। प्रकृतिजीत का

अर्थ है प्रकृति से बनी किसी भी वस्तु के आत्मा अधीन न हो। शरीर भी प्रकृति का बना है, संसार की सभी क्रियाएँ प्रकृति के पाँचों तत्वों के आधार से ही चलती हैं। इनको आधार बनाने वाली है आत्मा। अतः आत्मा मालिक बनकर शरीर को चलाए, प्रकृति का उपभोग करे पर उसमें आसक्त न हो। सदा अधिकारी बन, न्यारी-प्यारी और साक्षीद्रष्टा रहे। बहुतकाल के ऐसे अभ्यास से आत्मा प्रकृति को भी सहयोग देने वाली, पावन बनाने वाली बन जाती है। इसलिए पाँच हजार वर्षों से जिस प्रकृति ने हमारी निरंतर पालना की है, उसके स्वरूप को अपनी तपस्या द्वारा निखारना हम सबका कर्तव्य है। प्रतिदिन कुछ समय अवश्य निकालकर जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश को शुभ संकल्पों से अवश्य सींचिए, इनके प्रति अपना आभार प्रदर्शित कीजिए। इनमें से किसी भी चीज़ का अनावश्यक संग्रह मत कीजिए। परमात्मा पिता से सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की किरणें लेकर सारे ग्लोब पर डालिए ताकि प्रकृति के फटे वस्त्र को सीया जा सके। अगले पाँच हजार सालों तक यह दासी बन सेवा कर सके, इतनी शुभभावनाएँ इसे अवश्य दीजिए। ❖

एकाग्रता की शक्ति

• ब्रह्माकुमार बद्री विशाल, त्रिपाठीनगर (लखनऊ)

आपने कभी किसी मदारी को करतब दिखाते हुए अवश्य देखा होगा। ज़रा सोचिए, कंधे पर लाठी रखे, उसके एक सिरे पर कपड़े की गठरी में कुछ ज़रूरत की चीज़ें, कुछ करतब का सामान बाँधे, पेट भरने के लिए पैदल चलता इंसान कितनी लगन और एकाग्रता के साथ कितने समय तक जानवरों और बच्चों के साथ अपने करतब दिखाने का अभ्यास करता होगा।

बता बाबू जी के हाथ में क्या है?

ऐसी मेहनत, लगन एवं एकाग्रता का अनुभव मुझे तब हुआ जब कुछ वर्ष पूर्व एक चौराहे पर, एक आदमी अपने दस-बारह वर्ष के बच्चे के साथ आया। उसने उस बच्चे को जमीन पर चादर बिछाकर लेटा दिया, फिर चौकोर बड़ी टोकरी से ढक दिया, ऊपर से कई मोटे-मोटे कपड़े डाल दिये। तमाशा देखने वाले लोग चारों ओर बड़ा गोल घेरा बनाकर खड़े हो गए। मदारी टोकरी में बंद बच्चे से पूछता गया, 'बच्चे बता, बाबूजी के हाथ में क्या है?' टोकरी में बंद बच्चा एक-एक कर सही जवाब देता गया - 'छाता', 'घड़ी', 'थैला', 'छड़ी' आदि।

तमाशा देखने वालों में, उसी चौराहे पर ड्यूटी दे रहे दो सिपाही भी शामिल हो गये। उनमें से एक सिपाही ने सोचा कि यह मदारी सभी लोगों को बेवकूफ बना रहा है, इसने क्रम से, बच्चे को चीज़ों की लिस्ट रटा रखी है, उसी क्रम में यह पूछ लेता है और बच्चा आसानी से बता देता है। मदारी की इस कारगुजारी का पर्दाफाश करने की नीयत से सिपाही ने मदारी को बीच में रोकते हुए कहा कि तुम्हारा यह खेल झूठा है। यदि सचमुच तुम्हारा लड़का हर चीज़ के बारे में जानता है तो मैं जो पूछूँ वह बताये। मदारी बोला, हाँ बाबूजी, बच्चा अवश्य बता देगा। सिपाही ने अपने हाथ में ली हुई राइफल की ओर इशारा करते हुए कहा, अपने बच्चे से पूछो, इस राइफल का नम्बर क्या है? मदारी ने कहा कि बाबूजी पहले इस राइफल का नम्बर मैं देखूँगा, तब यह बच्चा आपकी राइफल का नम्बर बतायेगा। मदारी ने राइफल का नम्बर देखा जो कई अंकों का था। नम्बर देखने के पश्चात् टोकरी में बंद बच्चे को मदारी ने आवाज़ लगाई कि बता, बाबूजी की राइफल का नम्बर। बच्चे ने फटाफट राइफल का नम्बर सुना

दिया। सभी दर्शकों ने खूब तालियाँ बजाई, सिपाही शर्मिन्दा हो गया।

निरंतर अभ्यास से ही

एकाग्रता संभव

प्रश्न पूछने वाला सिपाही बेचैन हो उठा कि आखिर यह सब हुआ क्या? सभी दर्शक चले गये, मदारी भी सामान समेट कर चलने लगा। तभी उस सिपाही ने मदारी को अपने पास बुलाया, सामने पड़ी बेंच पर बिठाया। बगल के होटल से समोसे और चाय मँगा कर मदारी तथा उसके बच्चे को खिलाये। फिर पूछा, मेरी राइफल का नम्बर इस बच्चे ने तब बताया जब आपने उस नम्बर को स्वयं देखा। आपके देखने से बच्चे को नम्बर कैसे मालूम हो गया। मदारी ने जवाब दिया, एकाग्रता की शक्ति से। उसने आगे विस्तार करते हुए बताया कि मेरे गुरुजी, जिन्होंने यह सब सिखाया, मुझे बताया कि एकाग्रता बहुत बड़ी शक्ति है। वह दीवार में एक गोला बनाकर कहते थे कि इस गोले को एकाग्र होकर देखो, जब इस गोले के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई न दे तो बताना। फिर वे गोले को और छोटा करते गये और मुझे उस पर एकाग्र होकर देखने का अभ्यास कराते रहे। धीरे-धीरे गोले के स्थान पर बिन्दु बना दिया और कहा कि इस बिन्दु पर मन को एकाग्र करो।

(शेष.. पृष्ठ 27 पर)

गतांक से आगे ..

डिप्रेशन : जानकारी और समाधान

‘डिप्रेशन’ विषय पर, बहन कनुप्रिया द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन तथा ब्रह्माकुमार डॉ. गिरीश पटेल भाई।



प्रश्न:- जब डिप्रेशन इतना घातक हो जाये कि वो हमारे वश में ना रहे तो क्या करें? कई बार डिप्रेशन का शिकार व्यक्ति हिंसा पर उतारू हो जाता है, इसका क्या समाधान है?

उत्तर:- सूरत शहर में एक डिप्रेशन व्यक्ति ने बच्चों को नींद की गोलियाँ खिला दी, खुद भी आत्महत्या कर ली। इस प्रकार, सारा परिवार समाप्त हो गया। इसलिए डिप्रेशन को साधारण न समझो। शुरूआत होते ही इसे रोकने का पुरुषार्थ करो। अमेरिका में एक व्यक्ति ने बंदूक से 25-30 लोगों को मार डाला। हम कई बार समझते नहीं, दूसरे-दूसरे कारण खोजने लगते हैं पर वास्तव में वह व्यक्ति डिप्रेशन था। माँ ने बच्चों को मार दिया डिप्रेशन में, ऐसा भी हुआ है। ऐसी घातक अवस्था में तो मनोचिकित्सक से ही सलाह लेनी पड़ेगी क्योंकि उस समय तो डिप्रेशन व्यक्ति को यह भी अहसास नहीं होता कि वह कर क्या रहा है। घातक स्टेज ना आए, उसके लिए ज़रूरी है कि हम प्रतिदिन अपने लिए समय निकालना प्रारंभ करें। हम जीवन-यात्रा में इतना ज़ोर से भाग रहे हैं कि हमें रुककर चेक करने की भी फुर्सत नहीं कि हम सही दिशा पर हैं या नहीं। अपने से पूछें, क्या मेरे जीवन का यही उद्देश्य है कि मुझे पैसे से खरीदी जाने वाली हर चीज़ चाहिए? यह हो तो जायेगा पर सोचने की बात है कि क्या खुशी भी वांछित मात्रा में आई? बीच में,

एक बार रुककर, यह चेक किया जाए और अगर हम पाते हैं कि नहीं, खुशी कम हो रही है तो तरीका बदलें।

प्रश्न:- साइकोथेरेपी क्या है? इसमें क्या किया जाता है?

उत्तर:- साइकोथेरेपी बहुत प्रभावशाली है। विदेशों में इस पर बहुत शोधकार्य भी हुआ है। यह कई प्रकार की है। कोगनेटिव बिहेवियर थेरेपी बहुत कारगर है। कोगनिशन माना जो आप फील करते हैं, उसके द्वारा अपने बिहेवियर में परिवर्तन लाओ। इस पर अमेरिका में लाखों डालर खर्च किये गये यह देखने के लिए कि यह कितनी प्रभावशाली है। एमीप्रनाइन एक शक्तिशाली दवा है डिप्रेशन की। जितना यह दवा मदद करती है, उतना ही यह थेरेपी भी मदद करती है।

प्रश्न:- अगर हम छोटी आयु से ही बच्चों को सेल्फ काउन्सलिंग सिखा दें तो कैसा रहे?

उत्तर:- स्कूलों में भी काउंसलर होते हैं लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि वे उसे अन्दर के परिवर्तन की ओर ले जायें। आमतौर पर हम व्यवहार के स्तर पर परिवर्तन करना चाहते हैं जैसे कि बच्चे को कहते हैं, आप ऐसा करो, ऐसा मत करो। केवल व्यवहार का परिवर्तन तो अल्पकालिक होता है लेकिन हमें संपूर्ण परिवर्तन करना है। इसके लिए विचारों में परिवर्तन लाना होगा। अतः काउन्सलिंग इस प्रकार की हो कि बच्चे का

सोचने का तरीका बदले, न कि सिर्फ व्यवहार। वास्तव में तो सबसे अच्छे काउंसलर माता-पिता हैं और जब बच्चा दो साल का है तभी से यह शुरू हो जाना चाहिए। बच्चा कभी कहने से नहीं सीखता, देखने से सीखता है। कई माता-पिता कहते हैं, हमारे बच्चों को योग सिखा दो लेकिन माता-पिता खुद नहीं सीखना चाहते। कई बार माता-पिता का खुद का सोचने का तरीका गलत होता है और वे अपने बच्चों के विचार ठीक करना चाहते हैं, जो संभव नहीं है। हम कई बार बच्चों में अनावश्यक भय पैदा कर देते हैं, कई बार, बच्चे की गलती का दोष दूसरों पर डाल देते हैं, ये छोटी-छोटी बातें छोटेपन से उनके विचारों को गलत प्रभाव की ओर ले जाने लगती हैं। काउन्सलिंग ऐसी हो जो उन्हें गलत सोच से बचाए।

इस सारी चर्चा का सार यही है कि डिप्रेशन एक सच्चाई है, हममें से किसी को भी किसी भी उम्र में डिप्रेशन हो सकता है। आवश्यकता है कि सही समय पर उसे पहचान लें। कहा जाता है, जब आँख खुले तभी सवेरा और अपने ही माइंड पावर से हम काफी कुछ चीजें बदल सकते हैं लेकिन जहाँ लगे कि सहायता चाहिए तो सहायता ले लेनी चाहिए।

एकाग्रता की शक्ति..पृष्ठ 25 का शेष

जब उस बिन्दु पर मेरा मन पूरी तरह एकाग्र हो गया तो उस दीवार के सहारे स्वयं हमारे गुरुजी बैठने लगे और उन्होंने कहा कि अभी तक जो बिन्दु आप दीवार पर देखते थे वह मेरे मस्तक के मध्य देखो। मैंने गुरुजी के मस्तक के बीच बिन्दु देखने का पक्का अभ्यास किया। फिर मैं जब चाहता था, उनके मस्तक पर बिन्दु दिखाई देने लगता था। इस एकाग्रता के मध्य गुरुजी मेरे मन में उठने वाले विचारों को हूबहू सुन लेते थे और मुझसे कहते थे कि मैं अपने मन में जो विचार कर रहा हूँ, उसे तुम सुनाओ। इस प्रकार अभ्यास करते-करते हम दोनों एक-दूसरे के मन में उठने वाले विचारों को स्पष्ट रूप से ऐसे जान लेते थे जैसे कि कान में कोई स्पष्ट रूप से बोल रहा हो। दूर रहते भी हम दोनों एक-दूसरे को संकल्प के द्वारा ही संदेश भेजते थे। जब मेरा बच्चा थोड़ा समझदार हुआ तो मैंने यह विद्या अपने बच्चे को सिखा दी और आज मैं अपने बच्चे के साथ यह करतब दिखाता हूँ। इसी अभ्यास के कारण, जब मेरे मन में आपकी राइफल का नम्बर आ गया तो फौरन मेरे बच्चे ने आपको नम्बर सुना दिया।

एकाग्रता के द्वारा परमात्मा से संवाद संभव

मैं वहाँ इलाहाबाद जाने वाली बस के इंतज़ार में खड़ा था, बस आई और मैं उस पर सवार हो गंतव्य की ओर चल दिया। रास्ते में मैं उस मदारी द्वारा बताये गये एकाग्रता की शक्ति के अभ्यास एवं प्रयोग के बारे में सोचता रहा। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों द्वारा एकाग्रता की शक्ति से चमत्कारिक आविष्कारों और प्रयोगों की बात तो पढ़ी-सुनी थी किन्तु आज एक अति साधारण व्यक्ति द्वारा दिखाये गये एकाग्रता की शक्ति के कमाल ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। मैं सोचने लगा कि इस मदारी को यह ज्ञान नहीं है कि मस्तक के मध्य ज्योतिबिन्दु आत्मा का निवास है और मन अर्थात् संकल्प, आत्मा की सबसे बड़ी शक्ति है। फिर भी वह संकल्प शक्ति को दूसरी आत्मा पर केन्द्रित कर परस्पर संकल्पों का आदान-प्रदान कर रहा है तो हम बच्चे जिन्हें आत्मा और परमात्मा की शक्तियों का स्पष्ट ज्ञान तथा अनुभव है, ज्योतिबिन्दु परमात्मा पर मन को एकाग्र कर अपने परमपिता के साथ संवाद (Communication) क्यों नहीं कर सकते? एकाग्रता की शक्ति का विश्व कल्याण के प्रति प्रयोग क्यों नहीं कर सकते? क्या परमात्मा की प्रिय एवं श्रेष्ठ रचना, उस साधारण इंसान से भी कमजोर है?

हमारा घर टूटते-टूटते बच गया

• देवेन्द्र विजय तथा आशा, बठिण्डा



वैचारिक मतभेद, आपसी समझ की कमी, अपेक्षाएँ, उपेक्षाएँ, अहम् भाव, शंका, अनुमान और इसी प्रकार की अन्य नकारात्मक भावनाएँ आपसी संबंधों में कड़वाहट घोल देती हैं, दूरियाँ निर्मित कर देती हैं। देवेन्द्र विजय भाई तथा आशा बहन के बीच भी इसी प्रकार की कड़वाहट और दूरी निर्मित हो चुकी थी परंतु जैसे ही वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के समीप संपर्क में आए, ईश्वरीय ज्ञान ने उनकी सारी कड़वाहटों को धो डाला। अब वे कृतज्ञ हैं इस ईश्वरीय ज्ञान



के जिसने उनके टूटते घर को बचा लिया। प्रस्तुत है ज्ञानामृत से उनकी बातचीत...

— सम्पादक

ज्ञानामृत:- बहन आशा जी, मनमुटाव का कारण क्या था?

आशा बहन:- शादी के बाद हम दोनों के बीच इगो की जबर्दस्त दीवार खड़ी हो गई। एक कारण था इनका क्रोध और दूसरा कारण था मेरा परफेक्शनिस्ट (हर कार्य ठीक रीति से करने की आदत) होना। लौकिक परिवार से मिले संस्कारों के कारण मैं चाहती थी कि हर चीज़ यथास्थान पर रखी जाए। पति के कार्यों में इस मामले में लापरवाही को देख अंदर से झुंझलाती थी और कोई वश नहीं चलता था तो बोलना बंद कर देती थी। इस प्रकार चार-पाँच दिनों तक बिना बोले हम एक छत के नीचे रहते थे। सास-ससुर की उपस्थिति भी इस इगो को कम न कर सकी। सास से भी अक्सर कम्प्यूनिकेशन गैप होते-होते बोलचाल बंद हो जाती थी। वे अपने

बेटे को मेरी शिकायत लगाती थी और अक्सर हिदायत देती थी कि बहू को तो सब सहन करना ही चाहिए।

मैं प्राइवेट नौकरी पर थी, एक दिन मैं इनसे कहकर, अपनी नौकरी के बाद एक बाबा से पारिवारिक असंतोष के संबंध में सलाह लेने चली गई। वहाँ लंबी लाइन थी। इन्होंने फोन किया, शोर में मैं सुन न सकी, इन्हें लगा मैं शहर से बाहर चली गई हूँ। इन्होंने मेरे माता-पिता को बुला लिया और मुझे सफाई का अवसर दिए बिना ही माता-पिता के साथ पीहर भेज दिया। तीनों बच्चों को अपने पास रख लिया। मेरा इतना दोष तो नहीं था। मैं पीहर नहीं जाना चाहती थी पर कर कुछ ना सकी। बाद में मेरे से माफीनामे पर हस्ताक्षर करवाए और एक बिचौलिये ने समझौता करवाया, तब मुझे घर में आने दिया। इस प्रकार मेरा घर

बिखरते-बिखरते बच तो गया पर मन-मुटाव फिर भी बना रहा।

ज्ञानामृत:- भ्राता देवेन्द्र विजय जी, आपने इन्हें घर से क्यों निकाला?

देवेन्द्र विजय:- मेरे मन में प्रश्न था कि जब सब कुछ मिल रहा है फिर ये असंतुष्ट क्यों रहती है। मुझे अंदर से गुस्सा था कि पिछले सात वर्षों से यह मुझे तंग कर रही है, थोड़ा यह भी तो सहन करके देखे।

ज्ञानामृत:- इस संघर्ष का अंत कैसे हुआ?

देवेन्द्र विजय:- एक बार हमारा माउंट आबू घूमने जाना हुआ। वहाँ ब्रह्माकुमारीज में जाने का सुअवसर मिला। ज्ञान सुनकर बड़ी शान्ति मिली। यूँ तो मैं 'आर्ट ऑफ लिविंग' तथा 'पर्सनैलिटी डेवलपमेन्ट' के कार्यक्रमों में भाग ले चुका था पर इस आध्यात्मिक ज्ञान से मुझे बहुत सुकून

मिला। भटिंडा वापस लौटकर हमने संस्था से संपर्क किया। सात दिनों का कोर्स किया और बाबा की मुरली सुनने लगे। बहनों ने इतना सुन्दर मार्गदर्शन दिया कि हमारी इगो की दीवार गिर गई। आपस में बोलचाल प्रारंभ हो गई और हम दोनों ने अपने-अपने को बदलकर आपसी संघर्ष को समाप्त कर दिया।

ज्ञानामृत:- पारिवारिक शान्ति के अलावा आपको और भी कुछ लाभ मिला?

देवेन्द्र विजय:- हमारा टूटता घर बचा; मानसिक शान्ति मिली; धन की, स्वास्थ्य की, व्यापार की और मानसिक बल की बहुत वृद्धि हुई। पिताजी की अचानक मृत्यु को भी सहन करने का बल मिला। पहले बहुत ज्यादा व्यस्त रहने पर भी इतनी आमदनी नहीं थी, अब कम व्यस्तता है, आश्रम जाने का या अन्य सामाजिक ज़िम्मेवारियाँ पूरी करने का समय निकाल लेने पर भी काम-धंधे का कोई हास नहीं होता। होलसेल मेडिसन के व्यवसाय में लगभग पंद्रह सेवासाथी हैं। एक फैक्टरी भी है। पहले सेवासाथियों पर गुस्सा करता था पर अब उनकी पारिवारिक मजबूरियों को समझकर उनको सहयोग देता हूँ जिससे उन सबसे स्नेह-सहयोग का दिल का नाता जुट गया है। अब दुकान पर मेडिटेशन कक्ष बनाया है। हर कार्य में

बाबा के साथ का अनुभव होता है। बाबा को दिल से कहा तो पंद्रह साल पुराना मुख का अल्सर ठीक हो गया है। बाबा ने इतनी मदद की है कि अहसान भुला नहीं सकता। आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में मेरे

जितने भी प्रश्न, वहम, जिज्ञासायें थी, सब शान्त हो गई हैं। लोग अज्ञानतावश कहते हैं कि ब्रह्माकुमारीज में जाने से घरबार छूट जाता है, मेरा तो छूटने और टूटने के कगार पर खड़ा घर पुनः जुड़ गया है।

ओमशान्ति प्रॉमिस

ब्रह्माकुमारी नीलम, फरीदाबाद

सन् 2008 में मैं और मेरे युगल प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में नियमित रूप से जाने लगे। परमपिता परमात्मा का सत्य परिचय पाकर हमारी खुशी का कोई पारावार न रहा क्योंकि हमें वो मिल गये थे जिन्हें हम कब से ढूँढ़ रहे थे। लौकिक घर में भी जैसे खुशी की बहार आ गई।

एक बार ज्ञान-चर्चा करते हुए हमने अपने बच्चों को ट्रैफिक कंट्रोल (हर घंटे में एक या दो या तीन मिनट ईश्वरीय स्मृति) के बारे में बताया तो मेरी नौ वर्षीया बेटी ने मुझसे कहा, मम्मी, मैं तो स्कूल में ऐसा अभ्यास नहीं कर पाऊँगी लेकिन अगले दिन जैसे ही वह स्कूल से लौटी, बहुत उत्साहित होकर मुझे कहने लगी, मम्मी, मैंने ट्रैफिक कंट्रोल करना सीख लिया है। मैंने हैरानी से पूछा, कैसे? उसने कहा, जब स्कूल में हर अगले पीरियड के लिए बेल बजती है तो उसी समय मैं शिवबाबा को याद कर लेती हूँ। सच ही तो है, बाबा हमें जो युक्तियाँ सिखलाते हैं, उनके पालन से घर या कार्यालय या स्कूल, हर स्थान के वातावरण में अपार सुख व शान्ति का अहसास होने लगता है।

अब तो बच्चों ने खेल-खेल में एक-दो से सच्चाई बुलवाने के लिए 'ओम शान्ति प्रॉमिस' कहना शुरू कर दिया है। बच्चों की इस शुरुआत का प्रभाव ऐसा पड़ा है कि बड़े हों या बच्चे, 'ओम शान्ति प्रॉमिस' माना बिल्कुल सच। झूठ बोलने के लिए जैसे जुबान पर गोदरेज का ताला लग जाता है। वाह बाबा, आपकी शिक्षाओं ने घर-परिवार को कितना सुन्दर बना दिया! ❖

धैर्य रखें, हिम्मत न छोड़ें

• ब्रह्माकुमार रमेश सिंघानिया, अहमदाबाद

मैं काफी समय से हर पल, हर क्षण कुछ विचारों में खोया रहता हूँ कि मैं कौन हूँ लेकिन आधे मार्ग तक पहुँचकर वापस पहली जगह पर आ जाता हूँ। कारण है मन की चंचलता। मन की गति इतनी तेज़ है कि बारीकी से आज तक चिन्तन नहीं कर पाया। परेशानी एक हो तो समझूँ, कई उलझनें हैं। पहली समस्या यह कि धन कैसे कमाऊँ? दूसरी, जीवन में ऊपर कैसे उठूँ। शिवबाबा की कृपा से मुझे अनेकानेक नये-नये अनुभव मिले ज्ञानामृत पत्रिका से एवं ओमशान्ति मीडिया से। मैं पिछले छह महीने से ऐसी परिस्थिति में था जिसे बताने में मुझे शर्म आती है, मन को ठेस लगती है। यह समझिए कि सब कुछ शून्य था। पर कहते हैं, रात होगी तो दिन भी होगा, सूरज उगेगा तो प्रकाश भी होगा। दिन किसी के भी कभी एक-से नहीं रहे। धैर्य रखें, हिम्मत न छोड़ें, हिम्मत ही का एकमात्र सहारा है। मेरा एक दृढ़ संकल्प हाल ही में बना है। अनुभवों का भण्डार शिव बाबा ने इतना भर दिया है कि सीमा नहीं। इतना खुश हूँ, इतनी मुस्कराहट है कि पूछो मत।

सेवा से पीछे न हटें

यह देन है ब्रह्माकुमारी संस्था की मासिक पत्रिका की, इसके सरल शब्दों की और उनके चयनकर्त्ताओं

की। मैं भाग्यशाली मानता हूँ अपने को कि मुझे इस सुन्दर पत्रिका से नये-नये अनुभव मिले। खास अनुभव यह मिला कि जीवन पानी के बुलबुले की तरह है, यह बुलबुला कब समाप्त हो जाये, पता नहीं। हमें खास इन बातों को हमेशा जीवन में अपनाना ही होगा – प्रेम दो, मुसकराहट बिखेरो, आशीर्वाद लो माता-पिता-गुरु का, लोगों में अनुभव की खुशबू फैलाओ, सेवा से पीछे मत हटो, भोजन को प्रसाद रूप में धीरे-धीरे खाओ, अपमान न करो, मान की चाह पर विचार न करो, अंधेरे से डरो नहीं। सब कर्म करो, फल तो मिलेगा लेकिन कर्म अनुसार। मृत्यु निश्चित है। हर पल ध्यान रखो, मुझे अच्छा ही करना है। यह सब सिर्फ शिव बाबा ही दे सकते हैं। जब कभी मन में दुख हो तो उपरोक्त बातों को मन ही मन दोहरायें, मन शान्त होगा ही।

शिवबाबा सिर्फ

देना चाहते हैं हमें

‘ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।’

कुछ पाकर कुछ बाँटो। दाता ने सबको बहुत कुछ दिया है। शिव बाबा सिर्फ देना चाहते हैं एवं हम सब बच्चों को बदलना चाहते हैं। उन्हें कुछ भी



नहीं चाहिये। वे चाहते हैं, संपूर्ण संसार मुसकराये। सब बच्चे ज्ञान लें। आज से, अभी से, इसी क्षण से प्रयास करें, एक बीज बोयें, जो वृक्ष बनकर सबको छाया दे सके। यह संकल्प लें ज़रूर पर मुसकान के साथ, परमात्मा के साथ। वह दिन दूर नहीं जब आपके चेहरे पर मुसकान आयेगी और जब दर्पण में आप देखेंगे तो मन ही मन प्रसन्न होंगे। फिर सबसे पहले धन्यवाद देंगे ब्रह्माकुमारी संस्था को जो आज संपूर्ण विश्व में सुन्दर-सुन्दर कार्यक्रम कर रही है। मैं सबका दिल से आभार प्रकट करता हूँ।

जो इकट्ठा किया है उसे बाँटें

मुझे अगर शिवबाबा की कृपा, आशीर्वाद नहीं मिलता तो यह बात सौ प्रतिशत सत्य है कि मैं आज रोड़ पर खड़ा होकर भीख माँगता। कारण, कोई मददगार था ही नहीं। रिश्तेदार, सगे-संबंधी, मित्र – सब किनारे पर खड़े कर चल चुके थे। मुझे भी शर्म आने लगी कि क्या मैं सचमुच इतना

गिर चुका हूँ। लेकिन वास्तविकता की सही खोज मिली ज्ञानामृत एवं गीता-ज्ञान से। ठीक है, हम जो ज्ञान पाते हैं, वह लिख पाते हैं। अगर जीवन में ज्ञानामृत पाना है तो सर्वप्रथम जो मन में इकट्ठा किया है, उसे बाहर बाँटो, तो ही ज्ञान का नया प्रकाश अंदर समायेगा। अध्ययन से ही ज्ञान बढ़ेगा। मधुर वाणी से ज्ञान बढ़ेगा। मैं-मैं करने वाले को एक दिन छुप-छुप कर रोना भी पड़ेगा जैसे मेरे जीवन में भी हुआ। अपनी मैं को (मन की आश, मन की चाह) आग लगा दो, देखो एक बार अंधेरा दिखेगा ही लेकिन बाकी का जीवन संपूर्ण रूप से प्रकाश की किरणों से भर जाएगा। यह सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने की शैली है।

क्या पाया ज्ञानामृत से

1. शिव बाबा की सेवा का मौका, 2. भूतकाल को भूलना, 3. वर्तमान में जीना, 4. जितना पाया, उससे अधिक बाँटना, 5. मुस्कान लाना और बाँटना, 6. हर सुबह एक नया विचार ढूँढ़ना, 7. ज्ञान न तो कभी खत्म होगा, न हुआ है। यह एक ऐसी ईश्वर की देन है जो हमें उस तक ले जा सकती है, 8. अच्छे संस्कार, 9. दृढ़ संकल्प, 10. ईश्वरीय शक्ति व आशीर्वाद की किरणों का उदय, 11. मैं और निराशा के शब्दों में क्रॉस लगाओ, 12. जो आज तक नहीं किया, उसे आज से शुरू करो।

ज्ञान ईश्वर की देन है

इस सत्य को कोई टाल नहीं

सकता कि जो मुझे ज्ञानामृत से मिला, वह अन्यत्र मिला नहीं। 'ज्ञानामृत' शब्द बहुत प्रबल है। ज्ञानामृत पत्रिका तो यही चाहती है कि संपूर्ण विश्व बदले, मुसकराहट की खुशबू लोगों के दिलों में भरे। पाठशाला जाते हैं, सत्संग जाते हैं, ज्ञान की चाह को लेकर हम भटकते हैं लेकिन अगर हम सिर्फ एक बार बाबा के द्वार आबू आएँ तो वहाँ मीठा फल ही मिलेगा। इस फल का जो स्वाद है, वह कम होने का नाम ही नहीं लेता। आप रसगुल्ले खाकर कुछ समय तक स्वाद पा सकते हैं पर यह जो मीठा फल आबू में है, वह फल और कहीं नहीं। यह मेरा अनुभव है। मेरा जो ज्ञान बढ़ा, वह ईश्वर की देन है। परमपिता इतने दयालु हैं कि उन्होंने कहा, तू जुड़ ब्रह्माकुमारीज से अगर ज्ञान पाना है तो। मेरे पास जो ज्ञान है वह परमात्मा का ही है, मेरा कुछ नहीं। मैं तो मुसाफिर हूँ और हर स्टेशन पर जा-जाकर यह बाँटना चाहता हूँ। ज्ञानामृत को पाओ, जीवन में लाओ, हरेक अक्षर का महत्त्व है।

मैं बार-बार, हजार बार ब्रह्माकुमारीज का बहुत-बहुत शुक्रिया अंतर्मन से करता हूँ। अगर 'ज्ञानामृत' नहीं मिलती या मैं नहीं जुड़ता तो मैं गोल-गोल दायरे में घूमता रहता, अब मैं सीधा ही चलता हूँ, पीछे न तो मुड़ता हूँ, न देखता हूँ।

'मैं-मैं' से मिलता है दुख

कुछ ऐसे लोग हैं जिनके पास धन

है, मित्र हैं, परिवार है, सब कुछ है, शोहरत भी है लेकिन सुख नहीं है, ठीक से नींद नहीं है, क्यों? यह इंसान के जीवन की बड़ी नहीं, सबसे बड़ी भूल है, गलती है। हमने जन्म लिया, शिक्षा ली, विवाह किया, बच्चे हुए, धन के लिए कई कार्य किये लेकिन यह सब व्यर्थ है, बिल्कुल व्यर्थ। मुझे बहुत ज्यादा दुख का अनुभव हर क्षण हो रहा है कि ऐसा क्यों होता है। जीवन के 55 साल में मैंने कम से कम 5500 गलतियाँ की होंगी जिनकी लिस्ट मैंने आज तक नहीं बनाई। हाँ, एक लिस्ट मन रूपी कंप्यूटर में बनाकर छोड़ रखी है जिसे मैं बिना याद किये भी याद रखता हूँ, वह लिस्ट यह है कि मैंने यह किया, मैंने वह किया, मैंने इसकी मदद की, उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया, मैं परिवार पाल रहा हूँ, हर जगह मैं-मैं। एक सुन्दर-सी बात याद आई, एक बकरी को एक युवक ने दो बात तोते की तरह रटवा दी, जिन्हें बकरी भी जल्दी से याद कर गई। वह उसे लोगों के सामने लाता और पूछता, अप्रैल के बाद क्या आता है? वह बोलती, मे.. (May)। वह फिर पूछता, जून से पहले क्या आता है, वह दुबारा कहती, मे.. (May)।

हम भी बार-बार रट रहे हैं मैं-मैं। इसे छोड़ दें, अभी इसी क्षण, अगर जिंदगी को सुनहरे पल की तरह संवारना है या जिंदगी में खुशबू की महक छोड़नी है तो। ❖

‘राममाला’ ले आई राम की माला में

• ब्रह्माकुमारी सरिता, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

मैं सन् 1997 में ईश्वरीय ज्ञान में आई, कारण बनी एक ‘राममाला’। धार्मिक विचारों वाली लौकिक माँ ने एक छोटी-सी पुस्तिका ‘राममाला’ मुझे पढ़ने को दी। मन में आया कि पुस्तिका को छपवा कर औरों को भी दूँ ताकि उनका भी समय सफल हो। घर के पास ही छापाखाना है, वहाँ गई तो निमित्त भाई मुझसे पूछने लगे – ‘किस रूप में भगवान को याद करती हो? कौन है भगवान?’ मैंने कहा – ‘मैं तो सबको मानती हूँ, घर में आठ-दस चित्र रखे हैं देवी-देवताओं के।’ भाई जी ने कहा, ‘बहन, भगवान तो एक ही है, आप गीता पाठशाला में आइये, स्वयं का व भगवान का सत्य परिचय प्राप्त कीजिये। पाठशाला में सुबह-शाम प्रतिदिन सत्संग होता है।’ मुझे तो जैसे ठिकाना मिल गया क्योंकि अंदर से आवाज़ आती थी कि किसी एक मार्ग की तरफ हो जा। अगले दिन से ही गीता पाठशाला में सात दिन का कोर्स प्रारंभ हुआ, कोर्स के बाद मुझे अनुभव हुआ कि मैं आत्मा हूँ, ज्योति हूँ, निराकार हूँ, चैतन्य हूँ, शरीर जड़ है, मैं शरीर से न्यारी हूँ। संसार रूपी नाटक मंच पर आकर मैंने शरीर रूपी वस्त्र धारण किया है, पार्ट पूरा होने पर मैं आत्मा शरीर को यहीं छोड़ अपने घर वापस चली जाऊँगी। मैं आत्मा

शरीर रूपी डिब्बी में रखे हुए बहुमूल्य हीरे की तरह हूँ, जैसे डिब्बी की कीमत हीरे के होने से ही होती है, इसी प्रकार मुझ आत्मा के साथ होने से ही शरीर की कीमत है। जैसे शरीर का पिता, शरीर जैसा वैसे आत्मा का पिता आत्मा जैसा, इस प्रकार आत्मा के पिता परमपिता परमात्मा शिव का भी मुझे सत्य परिचय मिला। विकारों की दलदल में फँसी मुझ आत्मा की बाबा ने अंगुली पकड़ी और बाहर निकाल लिया। मुझ आत्मा को साफ किया। अब मैं रोज ज्ञान-स्नान करती हूँ, शिवबाबा की प्यार भरी गोद में बैठने का अहसास करती हूँ। हर पल महसूस करती हूँ कि शिव बाबा की छत्रछाया में हूँ, भगवान हर पल मेरे साथ है, करनकरावनहार बनकर मेरा हर कार्य करवा रहे हैं। बाबा का प्यार पाकर समझ में आया कि ऐसा प्यार तो कोई और कर ही नहीं सकता।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दाखिला लिया तो परीक्षाएँ भी आनी ही थीं। पवित्रता के लिए बहुत सहन किया, बाबा ने शक्ति दी। सन् 2003 से ही घर पर बाबा की गीतापाठशाला खुल गई जिससे मेरे मन की आश पूरी हुई। मुरली में जब सुनती थी कि बच्चे, तीन पैर पृथ्वी दान दो तो मुझे अंदर तक टच करता था कि यह मुझे करना



ही है। इसके लिए मैं बाबा का दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ।

ज्ञान में चले अभी थोड़े दिन ही हुए थे कि बाबा ने मुझे सपने में दिखाया कि मैं घर की छत पर हूँ, न अंधेरा, न पूरी सुबह है। अचानक हाहाकार मच जाती है। नीचे देखती हूँ कि आग जल रही है, सब भाग रहे हैं, इधर से उधर। फिर मेरी नज़र ऊपर आसमान की तरफ उठती है तो देखती हूँ कि फ़रिश्तों की चाल से सफेद कपड़े पहने भाई-बहनें लाइन में चलते जा रहे हैं। बस, मेरी आँखें खुल गई। अब यह सपना समझ आता है कि हाहाकार में भी बाबा के बच्चे जो फ़रिश्ता स्थिति में रहेंगे, वो न्यारे हो बाबा की याद में उड़ते रहेंगे।

इस तरह एक ‘राममाला’ मुझे राम (शिव परमात्मा) की माला में ले आई। अब मैं एक विशेष आत्मा हूँ। स्वयं परमात्मा कहते हैं, बच्चे, आप कोटों में कोई आत्मा हो। सर्व का कल्याण हो, यही शुभ कामना दिल में है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org